



लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण

मुख्य संपादक
प्राचार्य डॉ. अशोक खैरनार

संपादक
प्रा. कांतीलाल सोनवणे
प्रा. अतिष मेश्राम
डॉ. प्रियंका सुलाखे





अथर्व पब्लिकेशन्स

लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण
Gender Equality and Women Empowerment

© सुरक्षित

ISBN: 978-93-87129-94-8

Book No. : 603

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क : ९४०५२०६२३०

जळगाव : तळमजला, ओम हॉस्पिटल, अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी,

जळगाव ४२५००१. संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २० ऑक्टोबर २०१८

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ६९५/-

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

निजामपूर-जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे आदर्श कला महाविद्यालय, निजामपूर-जैताणे येथे दि. २० ऑक्टोबर २०१८ रोजी झालेल्या एकदिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्रातील निवडक लेख.

या पुस्तकात समाविष्ट लेखांचे हक्क ज्या-त्या लेखकांकडे असून त्यांच्या मताशी मुख्य संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

२ | अथर्व पब्लिकेशन्स



- कुसुम अंसल की कहानियों में स्त्री विमर्ष ३७३
- अनंत भालचंद्र पाटील
- ग्रामीण महिला नेतृत्व का उदय ३८०
- डॉ. शकुन मिश्रा
- साहित्य में नारी चेतना ३८४
(महाकाव्य 'कामायनी की श्रद्धा' के संदर्भ में)
- प्रा.डॉ. भारती बी. वळवी
- हिन्दी साहित्य रचना में प्रतिनिधी लेखिकाओं का योगदान .. ३८९
- प्रा. एम.जी. वसावे
- तसलीमा नसरीन की कविताओं में नारी विमर्श ३९४
- डॉ. अशोक एम. पवार
- राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान ३९९
- प्रा.डॉ. वासुदेव बी. माली
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री मुक्ति ४०५
- प्रा.डॉ. विजय गजानन गुरव
- हिंदी साहित्य लेखन में महिलाओं का स्थान ४१०
- डॉ. आशा डी. कांबळे
- मालती जोशी के उपन्यासों में चित्रित दहेज समस्या..... ४१४
- डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- प्रसार माध्यम टेलीविजन तथा मध्यम वर्गीय महिलाएँ ४२१
- डॉ. ममता नानकचंद पंजाबी
- भगवानदास मोरवाल के 'बाबल तेरा देस में' ४२५
उपन्यास में स्त्री-विमर्श
- प्रा.डॉ. मनोहर हिलाल पाटील

तसलीमा नसरिन की कविताओं में नारी विमर्श

- डॉ. अशोक एम. पवार

अध्यय, हिन्दी विभाग, ग.वृ. पार्लर महाविद्यालय, नंदुरबार

साहित्य जगत में कई स्त्रियों ने अपने मन की दमित भावनाओं को अपने काव्य व्याग तथा साहित्यों द्वारा अभिव्यक्त किया है। हिन्दी स्त्री लेखिकाओं में प्रारंभ में सदाश्री वाई तथा दयाबाई के नाम लिए जाते हैं। मोरा बाई ने तो अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर यह स्पष्ट कर दिया कि स्त्री भी साहित्य रचना कर सकती है। भोगाबाई ने अपनी दमित प्रेम चेतना को श्रीकृष्ण के माध्यम से अलौकिकता के आवरण में प्रस्तुत किया। उन्होंने योग, ध्यान, ज्ञान, आदि के साथ - साथ अपनी श्रृंगार भावना को भी अभिव्यक्ति दी। सामाजिक मर्यादा और दबाव के बीच से अपनी गह चुनी।

वर्तमान जीवन में नारी भी पुरुष के साथ दफ्तर-व्यवसाय में बराबर की भागीदारी करती है किन्तु उसकी मानसिक स्थिति निरव्यय ही पुरुष की मानसिक स्थिति से भिन्न होती है। आधुनिक कवयित्रियों की काव्ययात्रा अलौकिकता से लौकिक यथार्थ तक पहुंचने की यात्रा है। इस यात्रा में पहले धर्म, फिर समाज, फिर पवार और फिर अपने निजी व्यक्तित्व को आलंबन बनाकर आधुनिक कवयित्रियों ने अपनी अस्तित्व की खोज की है। उसने धर्म की सीढ़ियों को तोड़ा है। समाज की गली-सडी मर्यादाओं से विद्रोह किया है। पुरुष सत्ता की प्रधानता को नकारा है और आज समाज के जटिल यथार्थ, उसकी पूरी भयावहता के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर रही है। तसलीमाजी खुलकर अपनी बात कहती है। घर, समाज, परिवार, पति, प्रेम, परिवेश आदि विषयों पर इनकी आत्माभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

तसलीमा नसरिन का जन्म २५ अगस्त १९६२ को बांग्लादेश के मैमनासिंह गांव में हुआ। उन्होंने मैमनासिंह मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त की। तसलीमा नसरिन ने जीवन की शुरुआत कविता लेखन से की। उनका कवि मन हमेशा भटकता रहा। कविता करते-करते आप गद्य लेखन में प्रवृत्त हुईं। आपने विविध पत्र-पत्रिकाओं में अपने व्यक्तित्व अनुभव और सामाजिक सवालों से टकराते-जूझते कड़वे-मीठे अनुभवों को विभिन्न स्तम्भों या कॉलमों में लिखकर अपार लोकप्रियता प्राप्त की। अपने विवादास्पद लेखन के कारण वह बांग्लादेश, भारतीय महाद्विपों तथा विश्वभर में प्रसिद्ध एवं चर्चित हुईं।

६ दिसम्बर १९९२ को बाबरी मस्जिद का तोड़ा जाना उसी दौरान बांग्लादेश में मंदिरोँ का तोड़ा जाना और हजारों हिन्दुओं को कत्ल कर देना जैसी घृणित घटनाओं की ओर तसलीमा ने अपनी लेखकीय दृष्टि डाली। उसी दौरान उनके मन से जो हुंकार निकली वह लज्जा (उपन्यास कृति) थी। वही उनकी विश्वभर की पहचान बन गयी।

तसलीमाजी लेखन के साथ-साथ अपना स्त्री धर्म भी निभा रही हैं। वह नारी-सुधार चाहती हैं। विश्वभर में नारीमुक्ति आंदोलन गति ले चुका है इसी शृंखला में तसलीमा जी एक कड़ी हैं।

तसलीमा जी ने सारे संसार में हडबड मचा दी। सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक स्तरों पर विवाद हुआ। उनकी जिनगी का प्रश्न उपस्थित हुआ। पश्चिमी देशों की सरकारों ने उनकी रक्षा के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट की। केवल चिन्ता प्रकट नहीं की बल्कि उन्हें आश्रय भी दिया। एक सच्चे साहित्यिक को छुपने के शिवा चारा ही नहीं रहा।

तसलीमा आधुनिक नारी हैं। नारी का परंपरागत रूप उन्हें पसंद नहीं है। वे चहारदिवारी में बंद रहना नहीं चाहती। नारी संसार की आधी शक्ति है अब वह जान गयी है। नारी विश्व की जननी है। अब वही नारी तसलीमा बनकर विश्व को नया मार्ग दिखाना चाहती है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गयी है। आज तक कई नारी लेखिकाएँ पैदा हुईं। उन्होंने नारी विषय पर लिखा परंतु किसी ने अपने मन की बात को स्पष्ट और पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं किया इसका एक कारण हो सकता है, वह है समाज का डर या पुरुष का डर। तसलीमा कहती हैं कि पुरुष हमेशा अपने-आप को शक्तिशाली समझता आया है परंतु अब वह पुरुष को शक्तिशाली मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

हर रात मेरे बिस्तर में आकर सोता है एक नामर्द

आँखों पर, होठों पर और ठोड़ी पर

चंचल चुम्बन लेते-लेते ...

मुझे उत्तम और प्रज्वलित कर

गहरी नींद सोता है नपुंसक!१

आज की नारी मुक्त होना चाहती है। वह उन्मुक्त होकर प्रकृति में घुल-मिल जाना चाहती है; नये युग की नयी राह स्वीकार कर नवनिर्माण में सहयोग देना चाहती है। तसलीमा जी इसी शृंखला की एक कड़ी हैं। वह नवयुवतियों को जागरूक करना चाहती हैं।

वह कहती है -

तुम लडकी हो,

यह अच्छी तरह याद रखना

तुम जब घर की चौखट लौंघोगी

लोग तुम्हें टेढ़ी नज़रों से देखेंगे। ...

तुम जब गली पार कर मुख्य सडक पर पहुँचोगी

लोग तुम्हें बदचलन कहकर गालियाँ देंगे।^२

तसलीमा समाज की सड़ी-गली मान्यता, रीति-रिवाजों से मुक्त होना चाहती है। उन्हें विश्वास है कि औरत ही औरत को आजाद कर सकती है। इसलिए वह विद्रोह करने पर उत्तर आती है और कुरीतियों को जला देना चाहती है। जला देने में ही नवनिर्माण छिपा है।

सभ्यता का पेट्रोल छिड़क कर

कायदों-कानूनों को जला देगी और

सती व्रत कथा नष्ट कर देगी...।^३

स्त्री जिस पुरुष के साथ रहती आयी है वही पुरुष स्त्री के हर अंग-प्रत्यंग से परिचित हो जाता है परंतु उसके हृदय को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता।

इतना ज्यादा करीब जिसके आयी हूँ मैं

हुआ है जिसने सारी देह के रोयें-रेखे को

हुआ है सब कुछ, सिर्फ नहीं छू पाया

दोनों हाथों से सँभालकर उस हृदय को।^४

तसलीमा पुरुषो की पवित्रता पर कठोर प्रहार करती है। मंगलसूत्र स्त्री के गले में होता है पुरुष के नहीं क्योंकि पुरुष बड़े सज्जन होते हैं।

पुरुष बड़े सज्जन होते हैं.

पुरुषों के लिए सतीत्व के प्रमाणपत्र की

जरूरत नहीं होती।^५

स्त्री को अपने जीवनसाथी से बड़ी आकांक्षा है परंतु कुछ न मिलने पर वह संताप से कहती है -

लोगों की भीड़ में ऐसा आदमी कहाँ

जिसके पास कुछ मिलने की उम्मीद हो।^६

इस तरह तसलीमा को एक समाज सुधारक भी कर सकते हैं। जैसेकि समाज का एक वर्ग अर्थात स्त्री अपने अधिकारों से वंचित है। उसे अपने अधिकार पाने का अधिकार है। अपना अधिकार अगर महजता से नहीं मिलता तो

विद्यार्थ का उसे प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए उनके काल्प में पुरुष वर्ग के प्रति शिक्षता-शिक्षणपर और पारिवारिक जीवन के प्रति घुटन विद्यमान है। पुरुष के पलायन की शक्तिमानक कथ से बाकी समजता से लिखती हैं-

एक्य के कर्म पर चन्द्रकर बीजा है चाई,

चर खरणी से पंच लिता मरा है,

शीली बजा मरा है 19

कन्याश्री लिखती है - औपन को तो बस एक यौन - वस्तु के रूप में व्यवहार किया जाता है। एक अध्या प्राणी, बच्चा पैदा करने का मशीन, आदिमियों की गुलामाई तत्कालीन आधुनिक कियों के संदर्भ में लिखती है कि, यह काफी चिंता का विषय है कि दुनिया के बहुत से हिस्सों में औरतें जितनी ज्यादा शिक्षित होती जाती है उतनी ही ज्यादा वे विनयनाक परंपराओं का उत्सव मना रही होती है। पुरुष संदर्भ में प. बंगाल का प्रिंटू खेला उत्सव या नवरात्रोत्सव का अच्छा उदाहरण है।

तत्कालीन अपने आप को बचाने के लिए विदेश में चली गयी परंतु वहाँ भी उनका कवि मन आत नहीं बीटा बल्कि वहाँ भी कविता लिखता रहा है। वह ज्यादा मना चाहती है। विदेश में सबकुछ है, फिर भी उनका मन अपनी जन्मभूमि की ओर आकर्षित है।

इस तरह आधुनिक कन्याश्रितियों की काल्पयत्रा अलौकिकता से लौकिक शायद तक पहुँचने की यात्रा है। इस यात्रा में पहले धर्म, फिर समाज, फिर परिवार और फिर अपने निजी व्यक्तित्व को आत्मचान बनकर आधुनिक कन्याश्रितियों ने अपनी अविद्या की योजन की है।

उनके धर्म की किर्यां को रोझ है। समाज की गली-सड़की मर्यादाओं से विरोध किया है। पुरुष समाज की प्रधानता को नकारा है और आज समाज के जीवन शायद को उसकी पूरी भयानकता के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर रही है। यह आधुनिक शक्तिशाली की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

अंततः धरना ही कला जो सबका है, तत्कालीन की यौथी लडाईं पुरुष जीवन, समाज व्यवस्था, सामाजिक कला कला और धरना से है। यह पूर्णतः आधुनिक है, परिवर्तनकारी है। यह पुरुष के अंतर्बाह्य स्वरूप को स्त्री के सामने परिणामतः स्त्रियों के सामने रखना चाहते हैं और स्त्री की सर्वांगीण स्वतंत्रता चाहती है।

संदर्भसूची

१. 'तसलीमा नसरीन की कविताएँ', तसलीमा नसरीन, अनु. मुनमुन सरकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. सितंबर १९९४, पृ.२८
२. वही, पृ.१३
३. वही, पृ.१७
४. वही, पृ.५३
५. वही, पृ.४०
६. वही, पृ.४३
७. वही, पृ.२२
८. हंस, नवंबर २०१३, पृ.८४
९. वही, पृ.८४

Vertical text on the left side of the page, possibly a title or header, written in a non-Latin script.





**प्रेमचंद के साहित्य में
दीक्षित एवं नारी विमर्श**

प्रा. अनिल सूर्यवंशी



पुस्तक : प्रेमचंद के साहित्य में दलित एवं नारी विमर्श
संपादक : प्रा. अनिल सुर्यावंशी
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन

सी-449, गुजनी, कानपुर - 208022
दूरभाष : (0512) 2285003
फ़ोन : 09415133173

Website: www.vidyaprakashankanpur.com
E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
प्रथम 2018

संस्करण : शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
शब्द सज्जा : श्री पूजा ऑफसेट, नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक :
मूल्य : 500/-

ISBN : 978-93-86248-27-5

Premchand ke Sahitya Mai Dalit Avam Nari Vimars

Edited by : Prof. Anil Suryavanshi

Price : Five Hundred Only.

12. मानव संवेदना की शक्ति	= डॉ. कोला पाठा/सती	84-87
13. दलित भित्तक प्रेमचंद	= डॉ. राजेश भारी	88-93
14. दलित विमर्श के संदर्भ में 'कर्मभूमि' की महत्ता	= डॉ. अशोक गुप्ता	94-97
15. प्रेमचंद की कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श		
	= डॉ. वैभववीरवत महाजन	98-104
16. निर्मला उपन्यास में नारी विमर्श	= डॉ. कल्पना पाटील	105-108
17. प्रेमचंद की कथा साहित्य की प्रासंगिकता दलित चेतना के संदर्भ		
	= प्रा. ईश्वर ठाकुर	109-112
18. प्रेमचंद की कहानियों में दलित जीवन	= डॉ. सुनीता कावळे	113-117
19. प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना	= प्रा. पी. एम. चौधरी	118-122
20. गोदान : नारी एवं दलित विमर्श	= राजाराम तायडे	123-126
21. प्रेमचंद की कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श ('मेनामदन' के विशेष संदर्भ में)	= डॉ. पी. आर. गवळी	127-132
22. 'प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श'	= प्रा. करुणा अहिरे	133-136
23. निर्मला में अभिव्यक्त दहेज तथा अनामोल विवाह की समस्या		
	= डॉ. हुकुमचंद जाधव	137-140
24. 'निर्मला' उपन्यास में स्त्री विमर्श	= डॉ. सविता चौधरी	141-146
25. प्रेमचंद की कहानियों में दलित जीवन	= प्रा. रवींद्र खरे	147-152
26. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में अभिव्यक्त नारी विमर्श		
	= डॉ. कै. डी. सागुल	153-156
27. नारी विमर्शता की पहली गूँज- उपन्यास 'कर्मभूमि'	= प्रा. अंजीर भील	157-160
28. प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी (मेनामदन, निर्मला, मरदान तथा गोदान के संदर्भ में)		
	= डॉ. अमोल दंडवते	161-165
29. प्रेमचंद के उपन्यासों में शोषित नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण		
	= डॉ. संतोष तामखाने	166-171
30. प्रेमचंद की कथा साहित्य में नारी जीवन	= प्रा. निजय लोहार	172-176
31. प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी विमर्श	= प्रा. जाकिर शेख	177-180
32. प्रेमचंद का उपन्यास 'कर्मभूमि' में नारी विमर्श	= प्रा. प्रह्लाद पाचरा	181-183
33. 'कर्मभूमि' में अभिव्यक्त दलित संवेदना	= प्रा. देवींद्र खोटे	184-188
34. प्रेमचंद की कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श	= डॉ. प्रीति चौबी	189-192

दलित विमर्श के संदर्भ में 'कफ़न' की पड़ताल

डॉ.अशोक पवार

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी सम्राट प्रेमचंद की सुप्रसिद्ध कहानियों में 'कफ़न' एक है। यह प्रेमचंद की अंतिम पूर्ण कहानी है, "जिसमें मानव जीवन के नितांत भीतरी रूप का उद्घाटन हुआ है।" यह विचार कफ़न कहानी के मर्म को जानने के लिए एक सशक्त विंदु का काम करता है। प्रेमचंद यथार्थवादी परंपरा के कथाकार थे अतः यह कहानी भी यथार्थवादी परंपरा की कहानी है। इसमें मनोवैज्ञानिक और जीवशास्त्रीय सत्य भी छिपा हुआ है। यह कहानी बुर्जुआ परंपरा पर भी प्रहार करती है। यह कहानी लगभग 81 वर्ष बाद भी आलोचना का विषय रही है। हिन्दी के अनेक गणमान्य समीक्षकों ने इसकी समीक्षा की हैं। बावजूद इसके मुझे लगा कि दलित विमर्श की दृष्टि से 'कफ़न' की पड़ताल करना जरूरी है।

दलित शब्द का अर्थ - दलित विमर्श के संदर्भ में 'कफ़न' कहानी की पड़ताल करने से पहले 'दलित' शब्द पर दृष्टि डालते हैं। दलित वही है जिसे आर्यों ने 'शूद्र' संज्ञा से संबोधित किया। जिन्हे छूना भी पाप माना गया। उन्हें ही अस्पृश्य कहा गया है। महात्मा गांधी ने उन्हीको 'हरिजन' कहा। हरपाल सिंह 'अरुष' ने दलित शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि "इनका अपमान, शोषण, दलन, प्रताड़न किया गया। पशुओं से भी बदतर इन्हें माना गया। इनको छूना भी पाप माना गया। भगवान और भाग्य का भय दिखाकार इन्हें यथास्थिति में बने रहने पर विवश किया गया। दूसरे वर्णों की सेवा करना ही इनका धर्म निर्धारित किया गया..... धर्मग्रंथों में भी नरक का भय दिखाया गया।" शरणकुमार लिंगवाले, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय, डॉ.एन.सिंह, माताप्रसाद, डॉ.विमल थोरात आदि दलित साहित्यकार उपरोक्त बात को स्वीकार करते हैं। खास बात यह है कि दलित साहित्य बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर के विचारों का पुरस्कार करता है, महात्मा गांधी के विचारों का नहीं।

'कफ़न' कहानी पर दलित विमर्श की दृष्टि से विचार करने से पूर्व बीसवीं शताब्दी के दो महानायकों महात्मा गांधी और डॉ.भीमराव आंबेडकर के प्रमुख विचार तत्वों की पड़ताल करना जरूरी है। महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा, न्याय, दलितोद्धार के पक्षधर थे। वे वैष्णव थे, अतः ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारते थे। डॉ.आंबेडकर समता, स्वतंत्रता,

बंधुता, न्याय को मानते हुए ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करते थे। स्पष्ट है कि डॉ. आंबेडकर स्वर्ग-नरक, आत्मा-परमात्मा, पुनर्जन्म जैसे विचारों को माननेवाले नहीं थे।

प्रेमचंद की कहानियाँ तीन भागों में बँटी हुई हैं, उनमें 'कफन' एक कहानी है। यह कहानी आजकल दलित विमर्श की नजर से देखी जाती है। अतः 'कफन' की इस दृष्टि से पड़ताल करते हैं। 'कफन' तीन भागों में बँटी कहानी है। इस कहानी में एक ही वाक्य है जो कहानियों के पूरे कलवर को बदल देता है। वह वाक्य है - "चमारों का कुणवा था और सारे गाँव में बदनाम।" प्रेमचंद इस एक वाक्य को न लिखते तो यह कहानी कुछ और ही होती। ऐसे में पाठकों को लगता कि घीसू और माधव कामचोर और निकम्मे हैं। यह कहानी व्यक्ति-प्रवृत्ति को दर्शाने वाले या आर्थिक दृष्टि से कमजोरों की स्थिति को अभिव्यक्त करने वाली कहानी होती। 'चमारों का कुणवा' शब्द ने इसे शूद्र जाति की प्रवृत्ति से जोड़ा। इस एक वाक्य के कारण ही यह कहानी दलित विमर्श की चिन्तन परंपरा में आ गई है। यहाँ यह बताना बहुत जरूरी हो जाता है कि दलित जाति के नाम का उल्लेख होने मात्र से कोई कहानी या कोई विद्या दलित विमर्श की चिन्तन परंपरा में नहीं आती।

कफन का मनोवैज्ञानिक पक्ष -

'कफन' कहानी मनुष्य की आर्थिक विवंचना से उत्पन्न गरीबी और उससे प्रभावित स्थितियों को व्यक्त करती है। ऐसा भी कह सकते हैं कि 'कफन' कहानी जातिव्यवस्था से उत्पन्न आर्थिक विवंचना और भूख को उजागर करती है। इस कहानी का एक मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। इस मनोवैज्ञानिक पक्ष को अनदेखा नहीं कर सकते। यह पक्ष ही इस कहानी का मूल संवेदनात्मक पक्ष है। भूख किसी भी प्राणी को लगी हो वह अन्न पाने की कोशिश करेगा। भूख से परेशान मनुष्य प्राणी तो उदार, लंपट, बँगी, चेतनाशून्य, भावशून्य बन सकता है। यह उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति पर निर्भर है। भूखा आदमी जिसने अच्छा या स्वादिष्ट भोजन और वह भी भरपेट बरसो तक नहीं किया हो ऐसे आदमी के आगे सहिष्णुता, मानवीयता, संवेदना, स्नेह, ममता जैसे भाव चकनाचूर हो जाते हैं। ऐसा भूखा इन्तान वह सब कुछ करने को विवश हो जाता है, जो उसे नहीं करना चाहिए। घीसू और माधव को शूद्र, नीच, अमानवीय, कमीने, कामचोर चाहे जो भी कहे लेकिन इस बात को ओर ध्यान देना चाहिए कि प्रेमचंद ने घीसू के बारे में क्या कहा है। प्रेमचंद ने कहा - "हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचारशून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था।" इस मनोवैज्ञानिक पक्ष को अनदेखा नहीं किया जा सकता। अन्न मनुष्य को मूल जरूरत है, जिसके अभाव में उत्पन्न भूख मनुष्य को पशु तक बना सकता है और चोर भी। इसी विचार को अधोरेखित करनेवाली यह कहानी है। घीसू और माधव के माध्यम से 'भूख विमर्श' को अभिव्यक्त किया गया है।

भूख और कफन प्रसंग -

माधव का ब्याह करीब एक साल पहले हुआ था। बुधिया, घीसू और माधव के लिए दो वक्त का भोजन जुटाती थी। "वही औरत आज प्रसव वेदना से मर रही थी और वह

दोनों शायद इसी इन्तजार में थे कि वह मर जाय, तो आराम से सोयें।” घीसू और माधव दोनों बहुत भूखे थे। प्रेमचंद ने इनकी भूख का यथार्थता के साथ चित्रण किया है। वे लिखते हैं - “दोनों आलू निकाल-निकालकर जलते-जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र नहीं था कि ठण्डा हो जाने दें। कई बार दोनों की जबाने जल गयीं।”⁹⁶ दोनों में से कोई भी बुधिया की हालत देखने के लिए जाने को तैयार नहीं। “माधव को भय था कि वह कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा।” कहने का तात्पर्य है कि दोनों पर पशुत्व हावी है। अतः दोनों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। दोनों के मानवीय भाव भूख ने दबाये हैं। भूखा क्या न करता कहावत यहाँ सार्थक हो रही है। अर्थात् इस दुनिया में डरावनी चीज अगर कोई है, तो वह है भूख, भूख और भूख!

कहानी के दूसरे दृष्य में बुधिया की मृत्यु की खबर है। बुधिया की मृत्यु देखकर दोनों छाती पीट-पीटकर रोते हैं। लोग इकट्ठा होते हैं और बुधिया का अंतिम संस्कार करने के लिए बाँस काटने, लकडिया इकट्ठा करने में जुट जाते हैं। दोनों बाप-बेटे कफन के लिए गाँववालों से पैसे जुटाते हैं और बाजार से कफन लाने चले जाते हैं।

कफन कहानी का तीसरा दृष्य महत्वपूर्ण और निर्णायक दृष्य है। इसमें कफन जैसे बुरे रिवाज़ पर प्रहार तो किया ही है साथ ही भौतिक जगत का यथार्थ और आध्यात्मिक चिंतन भी है।

कफन में हिन्दू दर्शन - घीसू और माधव पाँच रुपये लेकर कफन खरीदने बाजार जाते हैं। तरह-तरह के कपडे, रेशमी और सूती देखते हैं मगर कोई कपडा पसंद नहीं आता। शाम होने पर दोनों किसी दैवी प्रेरणा से मधुशाला में पहुचते हैं और कफन के रुपयों से शराब खरीदकर पीते हैं। शराब के साथ तली हुई मछलियाँ, पूडियाँ, चटनी, चार, कलेजियाँ खरीद ली और खाना खाया। पेट भर जाने के पश्चात घीसू और माधव की बातों और व्यवहार की आलोचना करना बहुत जरूरी है। ऐसा करके दलित विमर्श की पडताल करना आसान होगा। घीसू बोला - “हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है, तो क्या उसे पुन्य न होगा”⁹⁷ माधव सहमती दर्शाते हुए कहता है - “जरूर-से-जरूर होगा। भगवान, तुम अन्तर्यामी हो। उसे वैकुण्ठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं।”⁹⁸ माधव बचा हुआ खाना भिखारी को देता है। उस वक्त माधव कहता है - “वह वैकुण्ठ में जायगी दादा, वैकुण्ठ की रानी बनेगी।”⁹⁹ प्रेमचंद ने यह प्रसंग उठाकर पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक की परिभाषा की है। शायद प्रेमचंद कहना चाहते हैं कि दूसरों की चिंता में जीने वाले, दूसरों के लिए जीने के साधन जुटाने वाले, दूसरों की इच्छापूर्ति करने वाले निःस्वार्थी को पुण्य मिलता है न कि दूसरो का शोषण करनेवालों को! “क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह मायाजाल से मुक्त हो गयी.....।”¹⁰⁰ घीसू की यह बात भी अध्यात्म से संबंधित है। घीसू और माधव के इन संवादों में आये हुए आत्मा, पुण्य, भगवान, वैकुण्ड, मायाजाल शब्द हिन्दू दर्शन को दर्शाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि इसमें गांधी चिन्तन या हिन्दू दर्शन है, ‘दलित विमर्श’ नहीं क्योंकि स्वर्ग-नरक, आत्मा-परमात्मा, भगवान, माया-मोह इन सब बातों को आंबेडकर जी ने नकारा है।

कहानी के तीसरे दृष्य के माध्यम से प्रेमचंद ने एक और मानव प्रवृत्ति पर दृष्टि डाली है। घीसू और माधव की जिंदगी भिखारी से अलग जिंदगी नहीं है। बचा हुआ खाना वे कल के लिए रख सकते थे। मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। बचा हुआ खाना वे भिकारी को देते हैं और बुधिया को आशीर्वाद देने की बात करते हैं। लेखक यहाँ यह बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि मनुष्य अपनी भूख मिट जाने के पश्चात दान-धर्म की सोचता है आत्मा परमात्मा, मोक्ष, पाप-पुण्य, के संदर्भ में चिन्तन करता है। भूखे पेट भजन न होय गुपाला उक्ति यहाँ सिद्ध होती है। भूख मिट जाने पर ही मनुष्य उछलता-कुदता है, नाचता-गाता है।

सारांश - सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी में दलित विमर्श की दो धाराएँ दिखाई देती हैं। एक धारा है डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित तथा दूसरी है महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि महात्मा गांधी ने अस्पृश्य या अछूत जातियों को 'हरिजन' संबोधन देकर शूद्रों का उद्धार करना चाहा था। बाबासाहब ने यथार्थ को स्वीकार करके मनुष्य को श्रेष्ठ माना और शोषित, पीडित, दबाये हुए, कुचले हुए, शूद्र कहे जाने वाले जनों को 'दलित' शब्द से संबोधित किया। प्रेमचंद के साहित्य में गांधी जी को अपेक्षित वर्ग का चित्रण हुआ है क्योंकि प्रेमचंद गांधीजी के विचारों से प्रभावित थे। दलित चेतना यह डॉ.आंबेडकर के विचारों से प्रेरित है महात्मा गांधी के विचारों से नहीं। अतः कहा जा सकता है कि 'कफन' कहानी में दलित विमर्श या दलित चेतना नहीं है। इसमें गांधी चिंतन या गांधी दर्शन है।

संदर्भ सूची :

1. कथांतर - संपा. परमानंद श्रीवास्तव, गिरीश रस्तोगी, (परिशिष्ट - कफन कहानी के संदर्भ में) पृ.166
2. दलित साहित्य की भूमिका - हरपाल सिंह 'अरुष', पृ.1
3. कथांतर - संपा परमानंद श्रीवास्तव, गिरीश रस्तोगी, कफन कहानी से, पृ.44
4. वही, पृ.46
5. वही, पृ.45
6. वही, पृ.46
7. वही, पृ.45
8. वही, पृ.50
9. वही, पृ.50
11. वही, पृ.51

स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
ग.तु.पाटिल महाविद्यालय, नंदुरबार.



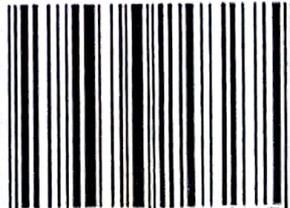


विद्या प्रकाशन

'सी' 449 गुजैनी,
कानपुर-208 022

E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
Website : www.vidyaprakashankanpur.com

ISBN 978-93-86248-27-5



9 789386 248275 >

₹ 500/-



Scanned with OKEN Scanner



Gender Equality and Women Empowerment

Chief Editor

Prin. Dr. Ashok Khairnar

Editor

Prof. Kantilal Sonawane

Prof. Atish Meshram

Dr. Priyanka Sulakhe





Atharva Publications

Gender Equality and Women Empowerment

© Reserved

ISBN: 978-93-87129-95-5

Book No. : 604

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

- Dhule : 17, Devidas Colony, Varkhedhi Road,
Dhule - 424001.
Contact: 9405206230
- Jalgaon : Basement, Om Hospital,
Near Anglo Urdu Highschool, Dhake Colony,
Jalgaon - 425001.
Contact: 0257-2239666, 9764694797
- Email : atharvapublications@gmail.com
Website : www.atharvapublications.com
- First Edition : 20 Oct. 2018
- Type Setting : Atharva Publications
- Price : ₹ 595/-

Disclaims: The authors are solely, responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepancies in future.

• The Dominant Female Protagonists in.....	209
Ruskin Bond's Selected Short Stories	
- Nilesh Bhatেশ्वर Malichakar	
• Women Emancipation and Empowerment	212
in Girish Karnad's Naga - Mandala :	
A Play with Cobra	
- Shri. Vijay Krishnarao Shinde	
• Gender Equality and Women Empowerment	216
- Dr. Mangalakshmi A.	
• Gender Discrimination in Vijay Tendulkar's	224
Silence! The Court is in Session	
- Mr. Ingle Ajabrao	
• Social and Economic Empowerment of Women.....	228
- Kalpana Siddhartha Mukunde	
• Important Constitutional Rights for	232
Women in India	
- Dr. Dileep Jankiram Ghongade	
• FGM is an Inhuman Custom : Gross Violation.....	237
of Human Rights of Women	
- Smt. Pradhnya P.Sawarkar	
✓ • Predicament of Women in Vijay Tendulkar's Plays	241
- Prin. Dr. A.P. Khairnar	
- Mr. D. B. Deore	
• Portrayal of Disquisitory Conditions of.....	247
Rural and Tribal Women through	
R.K. Laxman's Cartoon	
- Mr. Kasabe Prashant Dhondiba	
• Women Empowerment in Indian Politics	251
- Dr.Chhaya S. Gavit	
• Government Schemes for Women Empowerment	255
- Ms.Patil Sunita Arjun	
- Prin.Dr.A.P.Khairnar	
• Women Empowerment through Education in India	260
- Jyoti Sahadeo Wakode	
• Women, Human Rights & Education	264
- Shri Sahebrao U. Ahire	

Predicament of Women in Vijay Tendulkar's Plays

- Prin. Dr. A.P. Khairnar
Adarsh Arts College, Nijampur-Jaitane, Tel. Sakri (Dhule)

Mr. D.B. Deore
Department of English, GT. Paul College, Nandurbar

Abstract

Vijay Tendulkar, a well-known Marathi playwright, wrote more than twenty-five plays, focusing on the predicament of women. Tendulkar's plays: *Silence! The Court is in Session* (1967), *Sakharam Binder* (1972), *Ghashiram Kotwal* (1972), *Kamala* (1981) and *Kanyadan* (1983) present the women as the victims of the patriarchy. His heroines are simply trapped in the male dominated ideology. Tendulkar wrote that there is no change in the condition of literate or illiterate women. The patriarchal system of the society systematically pushes the women in the second position. At the same time, the societal system favour men in various ways. There are many social institutions work together to operate the male biased ideologies against women of the society. In fact, the structure of each social institution favour male and neglect female. The social institutions: marriage, court, media, law, police and education give scope to men. Surprisingly, women are taught from their childhood to follow the societal norms without any argument. As trained from the childhood, women do not voice against the brutality they meet after the marriage. In all this process, she loses her identity and becomes a dependent entity. In short, Tendulkar's plays are the fine examples to notice women's deplorable condition in the independent India. The plays make us to ask a question that women are really free or still they are captives of the male dominated ideologies. This paper is an attempt to show the disgraceful condition of women described by Tendulkar in his plays.

Key Words - patriarchy, social institution, brutality, suffering, pitiable condition, male dominated ideology, identity, dependent, voice, injustice, etc.

Vijay Tendulkar is a well-known playwright in Marathi Theatre for his minute observation regarding the pitiable condition of women in the post modern society. In his plays, he explains the brutal practice of the patriarchal thinking. In addition, he proves that the social institutions are made for the male favoured outcomes. In *Silence*

the Court is in Sessions, he explains how a woman becomes a trap in the male characters' group and how she surrenders at the last. In the play, the court and the educational institute fail to dispense justice to the female characters. Miss Benare and Mrs. Kashikar are the victims of the patriarchal society. Miss Benare's personal life is discussed. She requests the judge to stop all this nonsense game of trial, but the judge finds interesting details about the relationship between Prof. Damle and Miss Benare and hence he allows the game to be continued. Here, the group knows about the helplessness condition of Miss Benare and hence everyone becomes ready to drag her personal life into general discussion. Miss Benare becomes the subject of insulting and derogatory remarks.

Miss Benare is unmarried and maintains illicit relationship with Prof. Damle. Prof. Damle impregnates her and leaves her in hardship. The trial court discusses the matter with such seriousness that Miss Benare's act is dangerous to the normal order of the society. In this concern, the court passes the judgment that Miss Benare should live, but her child must be destroyed. Being a mother, Miss Benare refuses to do so. Here, the court is not interested in the person who impregnates Miss Benare. A man is also equally responsible in the crime, but he is set free by the court and only the female is punished. In addition, the school, where Miss Benare is a teacher, decides to rusticate Miss Benare since her act is violation of code of conduct of society. In this case, the education system keeps the male part aside from the punishment. At the last, Miss Benare succumbs to the group and remains the part of the trial though she does not want. Mrs. Kashikar, another female character, is unable to deliver a baby. In the patriarchal society, it is the worst failure of any woman who cannot become a mother. Actually, it could be a fault of her husband, but the society considers a woman at fault. She is constantly insulted by her husband, Mr. Kashikar. He does not consider her as even equal to him. Mrs. Kashikar's wise suggestions are insulted by her husband.

Sakharam Binder is full with the pitiable condition of women. In the play, the protagonist, Sakharam, simply challenges the long standing marriage institution. He comes out with the different living status that is live in relationship. He offers help to the destitute women, gives place in his house and treats them as his wives. He is very much clear with the notion of male heading family. He dictates very strictly his own created rules before the women partners. He

mentions that he is the boss of the family and at any cost his words go in the family. In short, he thinks that the women partners are equal to slaves for him.

Sakharam, as the representative of the patriarchy, strongly believes that the domestic responsibilities must be carried out by the women only. Hence, he orders Laxmi, his first woman partner, for tea as well as mentions that she has to fetch water from the river which is a mile away from his house. He never wants to help his partner in the domestic spheres. It is certified that a woman has to work within the four walls and at the same time a man supposed to do the outside business. Judy Brady in her essay *Why I Want a Wife* mentions that a wife is a domestic servant for a man. Brady writes, "I want a wife who cooks the meals, a wife who is a good cook. I want a wife who will plan the menus, do the necessary grocery shopping, prepare the meals, serve them pleasantly, and then do the cleaning up while I do my studying" (21).

The patriarchy assigned certain jobs to both men and women. It is a very systematic assignment where a man deals with the outer issues and at the same time a woman has to work within the house. It is a long standing patriarchal assignment. As the result of the domestic responsibilities, a woman becomes a servant of the family. The opening passage of the play depicts that men always expect much more from women. The expectations simply trespass women's rights and freedom. It is binding for a woman to fulfil the men's needs within the family. For example, in the play, Sakharam states:

SAKHARAM. ... And look, I won't have you leaving the house unless there's work to be done, you understand? If someone calls, you are not supposed to look up and talk. If it is a stranger, you will have to cover your head and answer him briefly. That's all. And if I'm not in around, don't admit anyone into the house... I must be respected in my own house. I am the master here. You agree to all this? In this house, what I say, goes, understand? The others must obey, that's all. No questions to be asked. (126)

Ghashiram Kotwal focuses on the male attitude to consider woman as a sex toy; as a source of sexual pleasure. The male character Nana Phadanvis, the head of the state, is a big fan of women's bodies. Nana does not make any difference between a teenager girl and a fully grown up woman. Nana wants only a female body to fulfil his sex hunger. This is a male domination that Nana uses against the women of his state. It has been practised widely

that a husband dominates his wife for sexual pleasure. In a number of cases, it has been observed that a wife's disagreement for sexual intercourse is not more important, rather than a husband's wish for the same. It is the domination of men over women. She has to be ready according to the wishes of her husband keeping aside her own mood and wishes.

The play underlines the dependent nature of a woman. Being the dependent entity, a woman is easily driven according to the men's wishes. In the play, Nana enjoys a little girl Gauri's beauty once. Nana wants the same body again and again. He begs Ghashiram for Gauri and is ready to offer Kotwali of Poona to him if he makes the girl available. Here, Ghashiram gives a bribe in the form of his daughter to Nana. It underlines that a woman is a commodity for men to fulfil the ambitions and hunger of sexual desire. A woman does not have her own identity and thought. She is a puppet in the hands of the men. The level of being puppet is well described by Girish Karnad. Prof. R. T. Bendre and Prof. Meera Giram comment on Girish Karnad's *Hayavadana*. They say, "Padmini has to perform sati even not knowing whose wife she is and for whom she is performing sati" (Bendre 88).

Kanyadaan is full with the working of male power against female. Acute working of male power results in the violence. Women face physical as well as mental harassment in their life. The play has many layers of violence. Of these, domestic violence is more observed than the other types of violence. Domestic violence has the deeper, multiple and sometimes invisible layer that is integral part of the civilised society. In the play, a Dalit youth Arun carries patriarchal ideology. He thinks that the contemporary upper class is the responsible for his being Dalit. He outpours his anger upon Jyoti who is from the upper class family. He uses his domination and tortures her mentally and physically.

In the domestic life, husband always wants his wife to be very attentive in her domestic chores. Arun's excessive demands forces Jyoti to make compromises. She faces trouble as she tries to be according to Arun. Arun identifies Jyoti's soft nature and hence he tortures her and later pretends to forgive him. In the play, he beats Jyoti twice and later asks for excuses. He kicks Jyoti on her womb. Arun attempts both the type of violence – physical and emotional. He knows very well, though he beats Jyoti, she could not do anything against him as she is a woman.

It is also observed that an educated woman also becomes a victim of the patriarchy. Furthermore, the educated woman also behaves like an uneducated woman. Here are similarities between Arun's mother and Jyoti. Both face physical violence and remain silent. It shows that the education institution fails to make the woman brave to stand against the brutal practices that work against them. It shows that whether educated or uneducated women do not raise voice against their sufferings rather they prefer to be a silent sufferer. It is the failure of the educational system as the social institution that cannot change a woman's condition. In addition, it is observed that education does not bring any change in Arun. He is a practitioner of patriarchal thoughts.

Jaisingh Pawar from the play *Kamala* is again a practitioner of the patriarchy. In his opinion, women are the assistants in the progress of men. Though he works for the betterment of women, he treats his wife Sarita equal to domestic servant. He abuses her when she denies offering her body for the sexual pleasure to him. Jaisingh uses Kamala for his own name and fame as a celebrated reporter. He presents Kamala in the press conference as a proof for the existence of human trafficking. He is a very narrow minded and uses women for his personal gain. "It is a fact in the history of mankind that man has been subjugating woman to his will" (Nimavat B. and Nimavat D. 6).

Media, the social institute, fails to stand by the side of women. In the press conference all the reporters pokes fun at Kamala. Nobody was serious about the pitiable condition of women in the independent nation. They count the success of the conference rather than pouring thoughts about the serious issues of the society. All the reporters celebrated the success of the conference, but unfortunately there was no change in Kamala's horrible condition.

Thus, Vijay Tendulkar acutely observed the mentality of the patriarchal society, where women have been treated secondary. Women meet to various types of violence in their domestic life. Men consider a woman as a source to fulfil their sexual hunger. The social institutions fail to dispense justice to women. The unquestioned long patriarchal ideology is in practice even in the post modern period and hence there is predicament of women. The plays of Vijay Tendulkar present secondary status of women. This reflects the predicament of women.

Works Cited

1. Brady, Judy. *Silver Lining*. Hyderabad: Orient BlackSwan, 2015. Print.
2. Bendre, R. T. and Giram, Meersa, Ed. *Critical Essays on the Plays of Girish Karnad*. Critical Publications: Nanded, 2009. Print.
3. Nimavat, B S and Nimavat, Dushyant. *Feminism and Women's Writing*. Sunrise Publishers: Jaipur, 2011. Print.
4. Tendulkar, Vijay. *Collected Plays in Translation*. New Delhi: Oxford University Press, 1992. Print.

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में
आदिवासी एवं
जनजातीय जीवन

डॉ. महेन्द्र रघुवंशी

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी एवं जनजातीय जीवन

डॉ. महेंद्र रघुवंशी

उपप्राचार्य, हिन्दी विभाग,
जी.टी.पी. महाविद्यालय, नंदुरबार.



ASTHA

ASTHA

Publishers and Distributors

NEW DELHI

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी एवं जनजातीय जीवन

- डॉ. महेंद्र रघुवंशी

यह संस्करण आस्था पब्लिशर्स अण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, वर्धन हाऊस,
अन्सारी रोड, दर्यागंज, नई दिल्ली - ११०००२ द्वारा प्रकाशित कि गयी है

ISBN : 978-93-85330-55-1

संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 350/-

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं । कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रूप में बिना अनुमति के मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता । इस चेतावनी का उल्लंघन करनेवाले कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के उत्तरदायी होंगे । सभी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा ।

आस्था पब्लिशर्स अण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

२१३, वर्धन हाऊस, ७/२८, अंसारी रोड, दारागानी, नई दिल्ली - ११०००२

फो. 0753171077, 07827130522

email.asthapublishers@gmail.com

प्राकथन

मानव विकास-क्रम जानने हेतु उसकी सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन आवश्यक है। सांस्कृतिक के द्वारा हमें प्रत्येक कालखंडों में होनेवाले परिवर्तनों की जानकारी मिलती है। समय गतिमान होता है। बदलते समय के साथ-साथ प्रत्येक मानव समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन होते रहे हैं। भौगोलिक परिक्षेत्र और जनसंख्या की दृष्टि से हमारा भारत देश विश्व के पटल पर एक विशाल देश रहा है। प्राकृतिक और भौगोलिक दृष्टि से भारत देश की संस्कृति, कला, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था तथा साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट पहचान रही है।

सबसे खेदपूर्ण और दुःख की बात यह है कि, मानव समाज का जहाँ से विकास हुआ है वही मानव का आदिम पहलू आज भी गरीब, उपेक्षित, शोषित, उत्पीड़ित, निरक्षर, अविकसित तथा विश्व के मानचित्र से अदृश्य रहा है। इसी गरीबी रेखा के नीचे के स्तर पर पलनेवाले, तथा समाज के अलग-थलग समुदाय से रहनेवाले को 'आदिवासी' की संज्ञा प्रदान की जाती हैं। वर्तमान समय में इन्हीं आदिवासियों के बने शरण स्थल दुर्गम और पहाड़ी स्थलों पर सभ्यता का चोला पहने लुटेरे, मानव जाति पर कलंक, अत्याचारी, शोषक समाज अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहा है। आज भी आदिवासी विकास की ओर अपेक्षित दृष्टि से देख रहा है।

'समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी एवं जनजातीय जीवन' पर प्रकाश डालना इस पुस्तक का उद्देश्य रहा है और उसी प्रकार आदिवासियों के समस्याओं को ध्यान में रखकर किया गया है। ऐसे अनेक विषयों को समेटे यह पुस्तक आदिवासियों की समस्याओं की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करता है।

प्रथम अध्याय में भारतीय आदिवासी समाज: दशा एवं दिशा को उद्घाटित किया गया है। द्वितीय अध्याय समकालीन आदिवासी उपन्यासकार व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय समकालीन का स्वरूप

विश्लेषण को समझाया गया है। चतुर्थ अध्याय समकालीन हिन्दी उपन्यास प्रगति एवं परंपरा को समझाया गया है। पंचम अध्याय समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी एवं जनजाति जीवन का चित्रण इसमें कई उपन्यासों को आधार मानकर उसे समझाने का प्रयास किया गया है।

अंत में मुझे यह विश्वास है कि, यह पुस्तक आनेवाले समय में हिन्दी उपन्यास साहित्य को दिशानिर्देश करता रहेगा।

- डॉ. एम. जे. रघुवंशी

अनुक्रम

१. भारतीय आदिवासी समाज : दशा एवं दिशा ७
२. हिन्दी के आदिवासी उपन्यासकार : व्यक्ति एवं कृतित्व २४
३. समकालीन का स्वरूप : विश्लेषण ३४
४. समकालीन हिन्दी उपन्यास – प्रगति एवं परम्परा ४५
५. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी एवं ५९
जनजातीय जीवन का चित्रण
- उपसंहार १०३
- परिशिष्ट १०८

भारतीय आदिवासी समाज : दशा एवं दिशा

आज के वर्तमान युग में भारतीय साहित्य में विशेष रूप से हिन्दी में चर्चित विचारप्रवाहों में ग्रामिण विमर्श, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श इनके साथ ही आदिवासी विमर्श ते जी से अपनी जड़ मजबूत कर रहा है। वैसे देखा जाये तो आदिवासी विमर्श को लेकर हिन्दी साहित्य में उसकी विभिन्न विधाओं में सृजन हो रहा है। हिन्दी के अन्य विधाओं के रूप में विशेष रूप से उपन्यास विधा में आदिवासी विमर्श का चित्रण विस्तार से हुआ है। इसके साथ ही आदिवासी जीवन को केन्द्र में रखकर हिन्दी उपन्यास संसार में कई उपन्यास लिखे गए हैं। यह आदिवासी जनजीवन हिन्दी में तथा अन्य भाषाओं में अपनी चेतना के स्वर को मुखरित कर अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश कर रहा है। वैसे देखा जाये तो इन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासीयों के जनजीवन की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियों का इतिहास के साथ ही आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत ही जीवंत और मार्मिक चित्रण हुआ है। साथ ही आदिवासीयों की जंगल विषयक आस्थाओं धार्मिक श्रद्धाओं प्रकृति पूजा आदि का चित्रण हुआ है। यदि हम आदिवासी जनजीवन पर बात करते हैं, हिन्दी उपन्यासों में आदिवासीयों का जो चित्रण उपस्थित ही रहा है उसे समझने से पले आदिवासी शब्द के अर्थ को जानना आवश्यक है।

मेजर हूड हसेल ने खान्देश के कलेक्टर को ५ मई १८५८ को लिखे एक पत्र में आदिवासी के संदर्भ में लिखा है कि, “जंगली किन्तु लड़ाकू, परंपरागत स्वतंत्रता संभालनेवाले सहनशील, घुस्सेल किन्तु उदार और इन्सानियत को मानने वाले लोगों ने अर्थात् आदिवासीयों ने अपने कब्जे में मिली स्त्रियों एवं बच्चों के रक्त से कभी भी हाथ नहीं रंगें। ऐसे जंगली किन्तु लड़ाकू, सहनशील, उदा तथा दयावान लोग मतलब आदिवासी है।”^१

१.१) आदिवासी शब्द का अर्थ

यह कहना होगा की, आदिवासी शब्द आदि और वासी इन दो शब्दों से



डॉ. महेन्द्र रघुवंशी

- जन्म** : १४ नवम्बर १९६७
- शिक्षा** : एम.ए., पीएच.डी.
- अनुभव** : जी.टी.पी. कॉलेज स्नातकोत्तर हिंदी विभाग नंदूरबार में १९९७ से अब तक व्याख्याता पद पर कार्यरत ।
- शोध निर्देशक** : उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जलगाँव द्वारा एम. फिल. एवं पीएच.डी. के मार्गदर्शक रूप में मान्यता प्राप्त । अब तक २ छात्र पीएच.डी. उपाधि से सम्मानित तथा ४ छात्रों का मार्गदर्शन जारी ।
- उपलब्धियाँ :**
१. यु.जी.सी. दिल्ली द्वारा २ लघुशोध परियोजनाओं के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त तथा लघुशोध कार्य पूर्ण ।
 २. सदस्य हिंदी अध्ययन मंडल उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जलगाँव ।
 ३. 'रघु-कलश' पत्रिका में खान्देश ब्यूरो के रूप में कार्यरत ।
 ४. गजमल तुलसीराम पाटील महाविद्यालय में २०१० से उप-प्राचार्य पद पर कार्यरत ।
 ५. नेशनल एडवाइजर कमेटी, आधार, सोशल रिसर्च, डेवेलोपमेंट ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट आधार पब्लिकेशन, अमरावती में सदस्य के रूप में कार्यरत ।
- प्रकाशित पुस्तकें :** "छठे दशक के हिन्दी उपन्यासों में लोक-संस्कृति" "कहानीकार मिथिलेश्वर एवं आनंद यादव" (विद्या प्रकाशन, कानपुर) समकालिन लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री विमर्श (विद्या प्रकाशन कानपुर)
- संपादित पुस्तक :** 'साहित्य - पीयूष' (विद्या प्रकाशन, कानपुर)
- सम्पर्क** : १०, "निर्मल", सरस्वती नगर, वाघेश्वरी माता मंदिर के समीप नंदूरबार
पिन कोड - ४२५४१२ (महाराष्ट्र)
- दूरभाष (निवास) :** (०२५६४) २२५२५० **चलभाष :** ०९४२३९४२७५०



ASTHA PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS

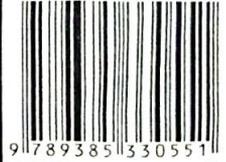
213, Vardan House, 7/28, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002

Ph. 07503171077, 09968066080

E-mail : asthapublishers@gmail.com

₹ 350/-

ISBN 978 93 85330 55 1



9 789385 133055 1

हमीद दलवाईच्या

कथा:

शोध आणि बोध



डॉ. माधव कदम

हमीद दलवाईच्या कथाः शोध आणि बोध

डॉ. माधव कदम

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM
AUTHORS AND PUBLISHERS



प्रशांत पब्लिकेशन्स

हमीद ढलवाईच्या कथा: शोध आणि बोध

© सुरक्षित



प्रकाशक व मुद्रक

रंगराव पाटील । प्रशांत पब्लिकेशन्स: ३, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालयाजवळ, जळगाव ४२५००१.

दूरध्वनी: ०२५७-२२३५५२०, २२३२८०० ईमेल: prashantpublication.jal@gmail.com

प्रथमावृत्ती: ऑगस्ट २०१८ आयएसबीएन: ९७८-९३-८८११३-१९-९ मूल्य: ₹ ९५

मुखपृष्ठ / अक्षरजुळवणी: प्रशांत पब्लिकेशन्स

या पुस्तकातील कोणताही मजकूर, कोणत्याही स्वरूपात वा माध्यमात पुनर्प्रकाशित अथवा संग्रहित करण्यासाठी लेखक आणि प्रकाशक दोघांचीही लेखी पूर्वपरवानगी घेणे बंधनकारक आहे.

www.prashantpublications.com

तंबाखू

मुक्त अभियान

एक चळवळ



डॉ. माधव कदम

तंवाखू मुक्त आभियान

एक चळवळ

डॉ. माधव कदम



प्रशांत पब्लिकेशन्स

तंबाखू मुक्त अभियान : एक चळवळ

© सुरक्षित



प्रकाशक : जिल्हा रूग्णालय, नंदुरबार राष्ट्रीय तंबाखू नियंत्रण कक्ष.

मुद्रक : प्रशांत पब्लिकेशन्स: ३, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालयाजवळ, जळगाव ४२५००१.

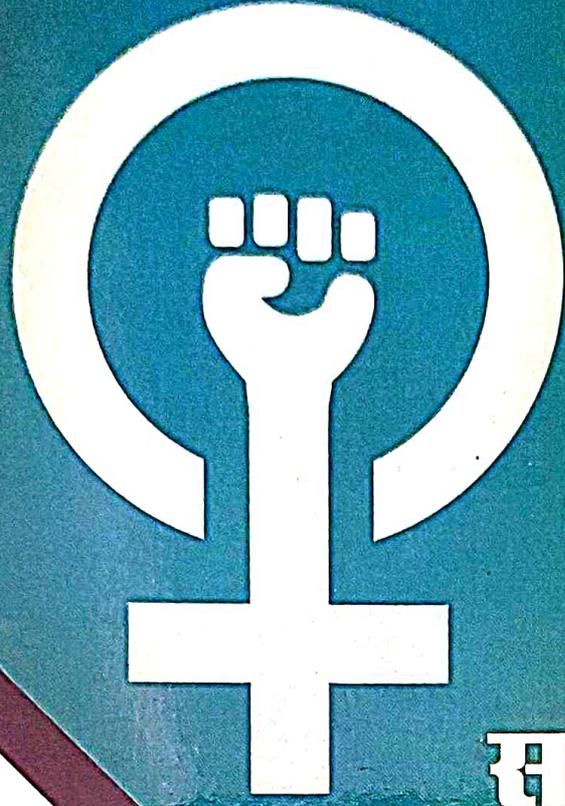
दूरध्वनी: ०२५७-२२३५५२०, २२३२८०० ईमेल: prashantpublication.jal@gmail.com

प्रथमावृत्ती: सप्टेंबर, २०१८ आयएसबीएन: ९७८-९३-८८११३-६२-५ मूल्य: ₹ १००

मुखपृष्ठ व अक्षरजुळवणी: प्रशांत पब्लिकेशन्स

या पुस्तकातील कोणताही मजकूर, कोणत्याही स्वरूपात वा माध्यमात पुर्नप्रकाशित अथवा संग्रहित करण्यासाठी लेखक आणि प्रकाशक दोघांचीही लेखी पूर्वपरवानगी घेणे बंधनकारक आहे.

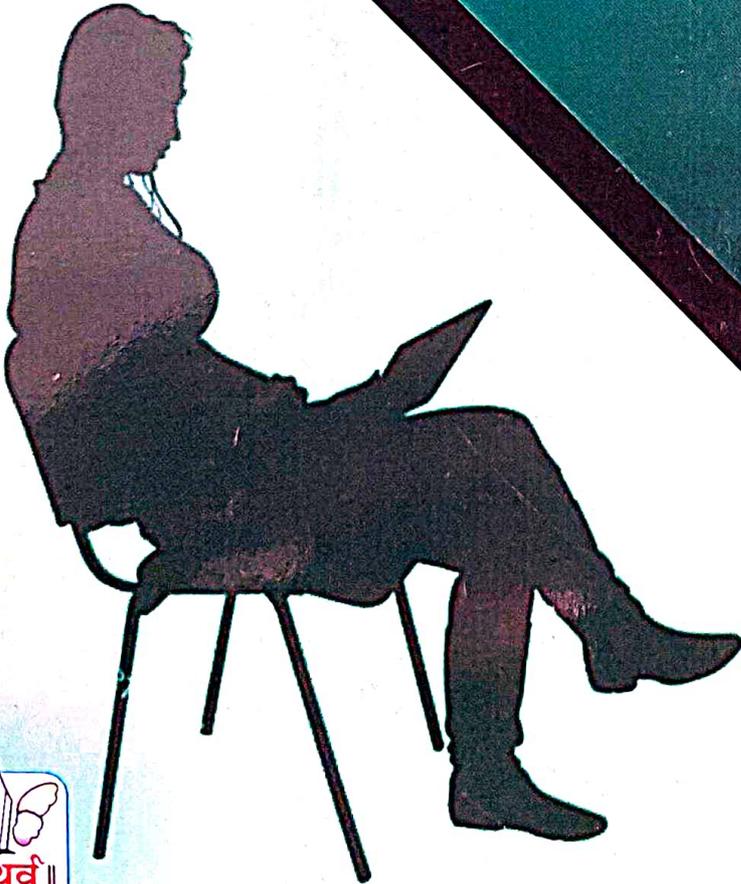
www.prashantpublications.com



लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण

मुख्य संपादक
प्राचार्य डॉ. अशोक खैरनार

संपादक
प्रा. कांतीलाल सोनवणे
प्रा. अतिष मेश्राम
डॉ. प्रियंका सुलाखे





अथर्व पब्लिकेशन्स

लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण
Gender Equality and Women Empowerment

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-87129-94-8

Book No. : 603

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क : ९४०५२०६२३०

जळगाव : तळमजला, ओम हॉस्पिटल, अंग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी,

जळगाव ४२५००१. संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २० ऑक्टोबर २०१८

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ६९५/-

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

निजामपूर-जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे आदर्श कला महाविद्यालय, निजामपूर-जैताणे येथे दि. २० ऑक्टोबर २०१८ रोजी झालेल्या एकदिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्रातील निवडक लेख. या पुस्तकात समाविष्ट लेखांचे हक्क ज्या-त्या लेखकांकडे असून त्यांच्या मताशी मुख्य संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

- धर्म व्यवस्थेला छेद देणारी गुलाबबाई २६५
- प्रा.डॉ. माधव कौतिक कदम
- स्त्री सबलीकरण २६९
- प्रा.डॉ. रवींद्र पोपटराव ठाकरे
- फासेपारधी समाजातील महिलांची स्थिती २७३
- प्रा. राजेंद्र बैसाणे
- ग्रामीण विकासात महिलांच्या सबलीकरणात २७७
शासनाची भूमिका
- प्रा. राठोड मदनसिंग सुपडू
- अनुराधा पाटील यांच्या कवितेतील स्त्रीवादी जाणीव २८१
- प्रा. संभाजी बाबाराव सावंत
- शहरी आणि ग्रामिण महिलांतील सुधारणा २८५
- प्रा.जी.जे. पावरा
- स्त्री, शिक्षण आणि मानवी हक्क २८८
- प्रा. मंगेश भावराव पाटील
- स्त्री-पुरुष विषयक असमानतेची भूमिका २९३
- प्रा.डॉ. मधुकर आत्माराम देसले
- शिवरायांचा स्त्रीविषयक सुरक्षितता व स्त्री-पुरुष समानता ... २९९
- प्रा. पाटील रोहिदास चैत्राम
- स्त्री भ्रुणहत्या : एक सामाजिक समस्या ३०३
- प्रा.डॉ. राजधर चैत्राम बेडसे
- प्रसार माध्यमातील स्त्री (पुरुष) ३०८
- प्रा.आर.एस. पाटील
- भारतीय स्त्रीचे समाजातील स्थान ३१२
- प्रा.डॉ. सतीश मस्के
- स्त्री सुरक्षा : एक आव्हान ३१८
- प्रा. प्रवीण बाबूराव मोरे
- स्त्री-पुरुष समानतेचा गोफ : काळाची गरज ३२३
- श्रीराम दाऊतखान

धर्म व्यवस्थेला छेद देणारी गुलाबबाई

- प्रा.डॉ. माधव कौतिक कदम

पदवी व पदव्युत्तर मराठी विभाग, जी.टी. पाटील. महाविद्यालय, नंदुरबार

स्वतःला सुधारक म्हणविणाऱ्या पुरोगामी महाराष्ट्रात स्त्रीला दुय्यम स्थान देण्यात आले आहे. धार्मिक कार्यातही तिला स्थान न देता पुरुषाचा डाव्या बाजूला बसवून धर्मशास्त्रात अपेक्षित ठेवले आहे. कर्मकांडाचे अधिकार ब्राम्हणाल दिले असून स्त्री ही ब्राम्हण असली तरी तिला अधिकारांपासून वंचित ठेवले आहे. धर्माच्या शिकवणूकीत रितीरिवाजात स्त्रीला कायम दुय्यम स्थान दिले नैसर्गिक अशा शरीर धर्मांमुळे अपवित्र मानून तीची बरोबरीची जागा आणि अधिकार नाकारले गेलेत बाईंचे काम आणि पुरुषांचे काम अशी विभागणी केली गेली आहे. या विभागणीमुळे पुरुषांची काम स्त्रीने केली तर ती निंदेच्या कृचतटेचा विषय ठरते. त्यामुळे स्त्रीयांमध्ये कोणत्याही क्षेत्रातही आपले कर्तृत्व सिद्ध करण्याची क्षमता असतानाही तिला नाकारल गेले. प्रस्थापित व्यवस्थेविरुद्ध वागली म्हणजे तिचा शहाणपणा काढला जातो. सतीवादीचा कायदा, पुनर्विवाहाचा कायदा, वारसा हक्काचा कायदा, या सारखे कायदे करून स्त्रीयांवर होणारे अन्याय अत्याचार कमी करण्याचा प्रयत्न केला तिला वाईट रूढीचा जाचातून मुक्त करण्याचा प्रयत्न झाला असे असले तरी परंपरेने चालत आलेल्या एखाद्या क्षेत्रात स्त्रीने धाडस केले तर मात्र तिच्याकडे कुचपटेने पाहिले जाते.

नाही म्हटले तरी आज स्त्रीने स्त्री प्रकारच्या पारंपारिक जोरवडातून मुक्त केले आहे. कला साहित्य, संस्कृती, समाज, शिक्षण, संगीत, रूढी, परंपरा, या साऱ्याच क्षेत्रात कर्तृत्व करत परालंबीत्व नाकारल सक्षमी करणाऱ्या दिशेने वाटचाल सुरु केली आहे. या विचाराला शंभर टक्के यश आले नसले तरी ते अधोरेखित करण्या सारखे मात्र निश्चित आहे. ४८ वर्षीय सीमाराव मिलीटरी मार्शल मध्ये देशातील पहिली कमांडो प्रशिक्षक, २४ वर्षीय अवनी चतुर्वेदी लढाऊ विमान उडवणारी १ ली महिला, सुरेखा यादव ही पहिली लोको पायलट गावगुंडा पासून आपल्या मैत्रीणीची रक्षा करणारी रुचिका गिरहेत्रा ऑलंपिक गाजविणारी सावरपाड्याची कविता राऊत, माऊंट एव्हरेस्ट सर करणारी कृत्रीम पाय जोडुन यशस्वी झालेली अरुनिमा सिन्हा, ३५ वर्षीय ममता देवी देशाची पहिली महिला बॉडी बिल्डर, चंद्राणी प्रसाद वर्मा पहिली मायनिंग इंजिनियर शुक्रवारच्या नमाज मध्ये इमामची

भूमिका पार पाडणाच्या पहिल्या महिला इमाम 'जमिता' १४०० मुलांना दत्तक घेऊन अनाथांच्या माता झालेल्या सिंधूताई सपकाळ या साऱ्यांनी प्रवाहाच्या विरुद्ध जाऊन आपले सक्षमीकरण सिध्द केले आहे.

या सर्व प्रवाहापेक्षा स्मशानपौरोहित्य अशा ठिकाणी महापात्र म्हणून काम करणाऱ्या गुलाबबाई अर्थात गार्गी या प्रस्थापित धर्म व्यवस्थेला छेद देऊन महिला सक्षमीकरणासाठी प्रेरणादायी ठरलेल्या देशातीलच नव्हे तर जगातील पहिल्या महिला आहेत. लेखिका मंगला आठलेकर यांनी गार्गी-अजून जिवंत आहे या साहित्य कृतीतून या यशस्वी स्त्रीचा जीवनप्रवास उलगडला आहे.

गुलाबबाई अमृतलाल त्रिपाठी अर्थात गार्गी नावाच्या स्त्रीची समाजमानावर असलेल्या धार्मिक कल्पनांचा पगडा आणि समाजव्यवस्थे विरुद्ध बंड करून उठलेल्या स्त्रीची कर्तृत्वकथा, गार्गी- अजून जिवंत आहे. या साहित्यकृतीतून समाजापुढे येते. व्यवस्थेपुढे, धर्मापुढे निर्माण केलेले प्रश्न चर्चेला जसे येतात तसे परंपरेला नाकारून तिचे स्वतःचे जे अस्तित्व सिध्द झाले आहे त्याची संघर्षगाथाही येते अर्थात व्यवस्थेने तिच्या या कर्तृत्वाला स्वीकारलं आणि तिने निर्माण केलेल्या वेगळ्या वाटेला मान्यता दिली. अर्थात तिनेच समाजाला हे मान्य करण्यास भाग पाडले.

गुलाबबाईचे वयाच्या ७ वर्षी लग्न, १० व्या वर्षी पहिले अपत्य आणि त्याच वर्षी स्मशानपौरोहित्य करणाऱ्या महापात्र म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या वडिलांचे निधन होणं, घरात ८ भावंडामध्ये सगळ्यात मोठी असल्याने आपल्याच वडिलांवर अंत्यसंस्कार करण्याची वेळ येणे, प्रयाग या हिन्दुपीठासारख्या पवित्र ठिकाणी धार्मिक परंपरा जोपासणाऱ्या, कट्टर सनातन वृत्तीचे दर्शन घडविणाऱ्या ठिकाणी आपल्या वडिलांचे स्मशानपौरोहित्य स्त्रीचा मेल्यानंतरच स्मशानभूमीत प्रवेश अन्यथा संबंध नाही स्त्रीला स्मशानभूमीत जाणं अधर्मकृत्य मानलं जात, प्रताला अग्नी देता येत नव्हता. अशा काळात दारागंज घाटात वयाच्या १० व्या वर्षी वडिलांचे स्मशान पौरोहित्य गुलाबबाई करता हा तेव्हा भल्या भल्या धर्मपंडितांच्या थोबाडीत मारल्यासारखे होते. स्त्रीने स्मशानभूमीत जाऊ नये. प्रेताला अग्नी देऊ नये. स्मशान पौरोहित्य करू नये असे कोणत्याच धर्मग्रंथात लिहिले नाही आणि लिहिले असेल तरी समस्त स्त्री वर्गाने त्याला विरोध का केला नाही? अशी भावना गुलाबबाईच्या मनात याच वयात निर्माण झाली. आणि त्यांनी त्याच दिवशी ठरवलं- दाह संस्कारात मंत्रविधी करणारा ब्राम्हण स्मशानपुरोहित महापात्र वडील महापात्र म्हणून जगलेत आणि मेलेतही त्यांच्या पश्चात आई भावंडाकडे उदरनिर्वाहाचे साधन नाही त्यामुळे त्यांच्या पिढीजात व्यवसाय आपण का करू नये? आपल्याला कोण मनाई करेल? महापात्र म्हणून

जगेन, मरेन आणि महापात्र म्हणूनच अमर होईल. कारण या आधी स्मशान पौरोहित्य करण्यासाठी एक ही स्त्री जशी पुढे आली नाही तशी मेल्यानंतरही येणार नाही. स्मशान पौरोहित्य करणारी एकमेव स्त्री म्हणून मरणानंतरही मीच राहीन. १ (पृष्ठ १३) जगातल्या कोणत्याही स्त्रीने निवडलं नाही असे क्षेत्र निवडणाऱ्या गुलाबबाईचा निर्धार वाखाणण्यासारखा आहे.

मुलगी जन्माला आली की तिला मारुन टाकणाऱ्या इलाहबादेतल्या फाफामऊचकिया या छोटयाशा गावात गुलाबबाईचा जन्म. बालपणच नव्हे तर अर्धे आयुष्य गरीबीत गेलेले. मुलगी मारुन टाकणाऱ्या काळात बापानं जिवंत ठेवलं त्याबद्दल त्या स्वतःच लिहितात- माझ्या सारख्या मुलीला आईवडीलांनी जिवंत कसं ठेवलं कुणास ठाऊक? कदाचित पुढे लाखो मृतांना स्वर्गती देण्याचं कर्म माझ्या हातून ईश्वराला करवून घ्यायचं असेल म्हणूनच माझ्या नशिबातला जन्मतःच लिहिलेला मृत्यू त्याने टाळला असावा? २ (पृष्ठ १८) म्हणूनच गावातल्या कोणत्याही रिती रिवाजाला न जुमानता ती मुक्त जगली. मुलगी म्हणून जन्माला आली तरी मुलगा म्हणूनच जगायचं असे ती जगते. यासाठीच वडिलांनी आधीच सांगितल्या प्रमाणे त्यांच्या पार्थिवाला अग्नी देते. स्मशान पौरोहित्य करते. पुढे हेच काम सुरु केल्यावर - अधर्म होईल, धर्म बुडेल, तुला वाळीत टाकू, तुझं कल्याण होणार नाही, वाटोळं होईल, नरकात जाशील, यमराज कोपेल अशी नको नको ती शापवाणी तत्कालीन पंड्यांनी, धर्मपंडीतांनी करुन गुलाबबाईला छळलं. पण तीने हाती घेतलेले व्रत सोडलं नाही. स्मशान भूमीलाच घर, तिथे येणारचे नातेवाईक, भूतंखेतच मित्र परिवार असं मानत राहिली. ज्यांच्याकडे फुटकी कवडी नाही, अंत्यसंस्कारासाठी पैसे नाहीत. अशा कितीतरी घरातले अंत्यसंस्कार स्वतःच्या खर्चाने गुलाबबाईने केलेत. म्हणूनच तीला गुलाबदेवी, महाराणीन बुवा, अम्मा अशा वेगवेगळ्या नावांनी बोलावतात. हे काम करतांना सासर-माहेरची माणसं विरोधात गेली, आमचं घर बाटवू नको, घरात जवेण बनवायचं नाही आणि जेवायचही नाही, स्मशानातच काम करं, अबला म्हणून हिणवलं, धर्मशास्त्रानं विरोध केला, उलटया हाताची म्हणून वाळीत टाकलं, तिची शेती बळकावली, मारेकरी पाठवले, सासरं सोडलं-माहेर सोडलं, एवढेच नव्हे तर समाजातील प्रतिष्ठा लक्षात घेऊन पोटची पोरही गुलाबबाईला सोडून गेलीत. तरीही ही जिद्दी स्त्री डगमगली नाही.

स्मशान पौरोहित्याच काम करत राहिली. स्वतःची वेगळी वाट निर्माण केली. संपूर्ण विसाव्या शतकात गुलाबबाई नावाच्या स्त्रीला हक्कांसाठी धर्मपंडितांच्या विरुद्ध झगडावं लागलं. स्त्री मुक्ती हा शब्द ही जिला माहित नाही तिचे कष्ट समाजाला धक्का देत नाहीत का?

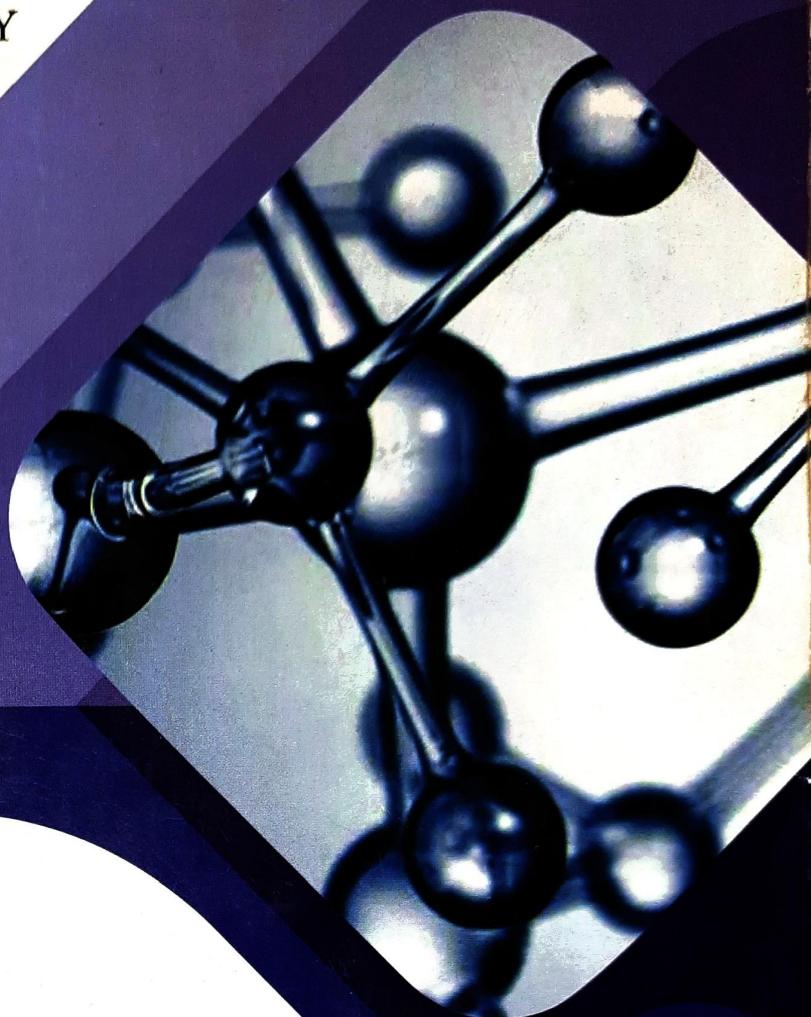
निष्कर्ष - १) स्मशान पौरोहित्याच काम स्वीकारून जगण्याची नवी वाट निर्माण करते. २) स्त्रीने स्मशान पौरोहित्या का करू नये? प्रेताला अग्नी का देऊ नये? स्त्रीने स्मशान भूमीत का जाऊ नये? असे जळजळीत प्रश्न धर्मशास्त्र आणि व्यवस्थेपुढे मांडते. ३) परंपरावाद्यांचा, त्यांच्या प्रवृत्तीचा आणि आर्थिक शोषणाचा बुरखा फाडून काढते. ४) धर्मान्ध आणि खुळचट परंपरेला ठामपणे विवेकी विरोध करते. ५) स्त्रीकडे दुय्यम म्हणून पाहण्याच्या संघर्षातून नवविचार स्थापित करताना नारीमुक्तीचा संदेश समस्त स्त्री वर्गाला देते.

संदर्भसूची

१. गागी- अजून जिवंत आहे, ले. मंगला राजहंस प्रकाशन, पुणे प्रथमावृत्ती फेब्रुवारी २००२ गेल्या अर्धशतकातील मराठी कादंबरी संपादन विलास प्रकाश लोकवाडमय गृह मुंबई प्रथमावृत्ती

KAVAYATRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
F.Y.B.Sc | SEM-I | CH-101

CHEMISTRY



**CBCS
PATTERN**

**PHYSICAL AND
INORGANIC CHEMISTRY**



Prof (Dr) A M Nemade
Prof N E Barhate
Dr V T Patil
Dr M R Patil



CH - 101
Physical and Inorganic Chemistry

© Authors

Publisher and Printer
Prashant Publications

3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425001.

☎ (0257) 2235520, 2232800

Website : www.prashantpublications.com

E-mail : prashantpublication.jal@gmail.com

First Edition : August 2018

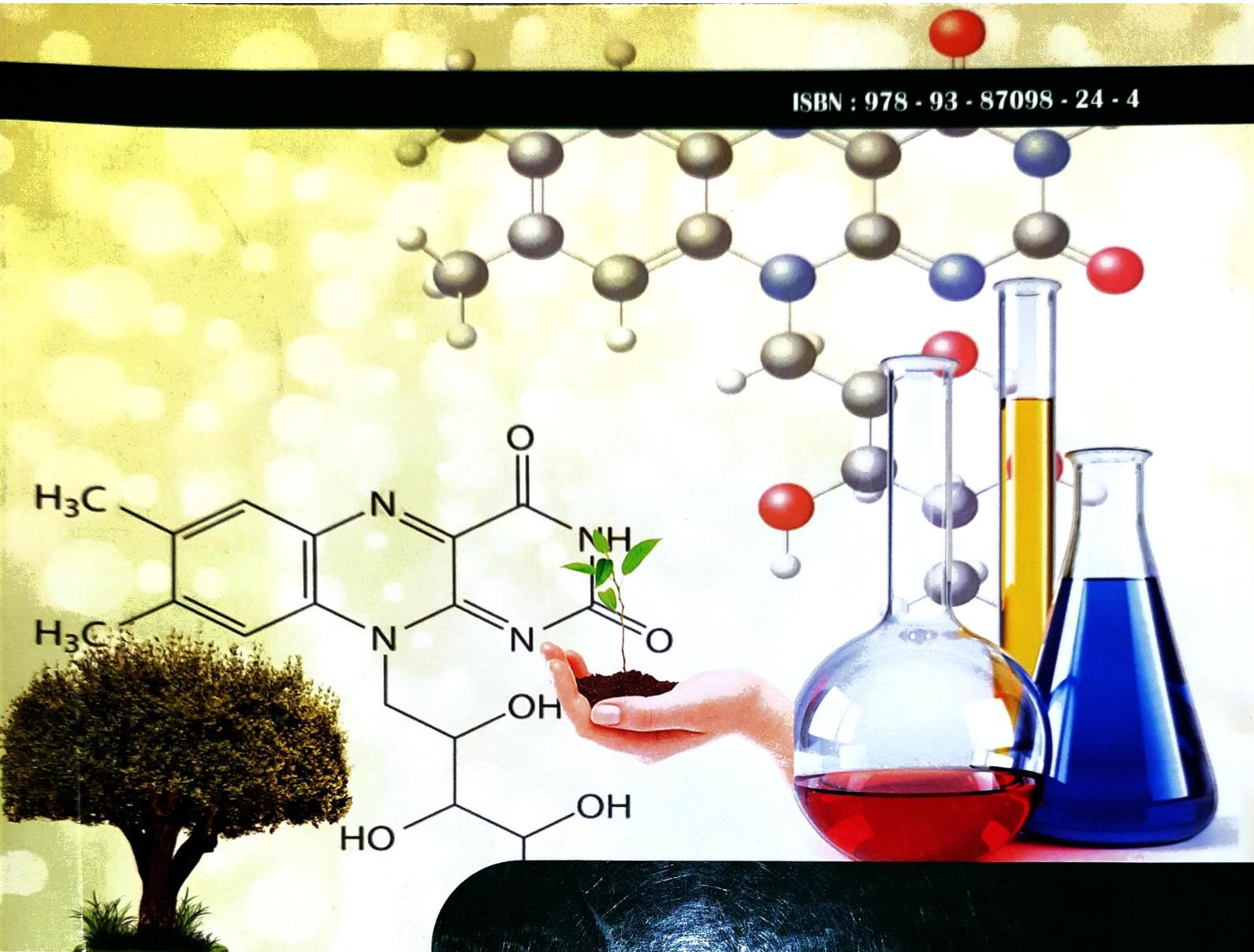
ISBN : 978-93-88113-21-2

Type Setting
Prashant Publication

Price : ₹ 65/-

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (xerox copy), recording or otherwise, without the prior permission.

ISBN : 978 - 93 - 87098 - 24 - 4



GREEN SYNTHESIS OF NANOMATERIALS AND THEIR APPLICATIONS

Editors -

Prof.Dr. V.S. Shrivastava

Prof.Dr. C.P. Sawant

Mr. P.S. Patil

Dr. M.R. Patil

Dr. S.P. Patil

GREEN SYNTHESIS OF NANOMATERIALS AND THEIR APPLICATIONS

12th February 2019

Editors

Prof.Dr. V.S. Shivastava

Prof.Dr. C.P. Sawant

Mr. P.S. Patil

Dr. M.R. Patil

Dr. S.P. Patil

Cover Page Designed by

Yogeshwar L. Jalgaonkar

Rudra Creations, Nandurbar

Type Setting & Printing

Rudra Creations, Nandurbar

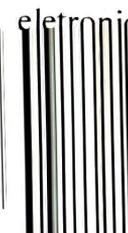
Ph. (02564) 220155, Mo. 9823724705

Publisher

Bahujan Sahitya Prasar Kendra, Nagpur

Disclaimer : The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publisher or editor do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication shall be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic (zerox copy), recording or other



भारतातील पुराभिलेखागाराचा व पुरातत्त्वविद्येचा परिचय

An Introduction of Archives and Archaeology in India

- प्रा.डॉ. एन.बी. शेंडे -



यूजीसीच्या मार्गदर्शक तत्वानुसार, फ.ब.ची. उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव व
इतर विद्यापीठांच्या नवीन अभ्यासक्रमावर आधारित तसेच
M.P.S.C., नेट-सेट व इतर स्पर्धा परीक्षांसाठी उपयुक्त असे अद्ययावत पुस्तक.

भारतातील पुराभिलेखागाराचा व पुरातत्त्वविद्येचा परिचय

(An Introduction of Archives and
Archaeology in India)

प्रा. डॉ. निशांत भिमरावजी शेंडे

इतिहास विभाग, सहाय्यक प्राध्यापक
गजमल तुळशीराम पाटील आर्ट्स, सायन्स
ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, नंदूरबार



अथर्व पब्लिकेशन्स



अथर्व पब्लिकेशन्स

भारतातील पुराभिलेखागाराचा व पुरातत्त्वविद्येचा परिचय
(An Introduction of Archives and Archaeology in India)

© सर्व हक्क सुरक्षित

ISBN 13 : 978-93-88544-35-1

पुस्तक प्रकाशन क्र. ६४४

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क: ९४०५२०६२३०

जळगाव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहू नगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालय समोर, जळगाव ४२५ ००१.

संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २०१९

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ ३५०/-

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपींग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.



As per Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
With effect from June- 2018

F. Y. B. Sc. • Sem II • PHY - 203

PHYSICS PRACTICAL

Dr. V. T. Patil
Prof. R. R. Patil
Dr. P. H. Pawar
Dr. N. P. Huse

Dr. V. R. Huse
Dr. S. C. Chaudhari
Dr. I. G. Patil
Prof. Thosar



Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

PHYSICS

530
PAT

F.Y. B. Sc. Semester-II, Lab-II

Practical Physics

[PHY-203]

87471

Dr. V. T. Patil

Associate Professor and Head Dept. of Physics
MGSM's, Arts, Science & Commerce College,
Chopda.

Dr. V. R. Huse

Assistant Professor, Department of Physics
MGSM's, Arts, Science and Commerce,
College, Chopda,

Prof. R. R. Patil

Associate Professor
Department of Physics
P.O. Nahata College, Bhusawal

Dr. S. C. Chaudhari

Associate Professor
Head Department of Physics
D. N. College, Faizpur

Dr. P. H. Pawar

Principal
Z. B. Patil College,
Dhule

Dr. I. G. Patil

Associate Professor, Head, Department of
Physics P.S.G.V. P.S. College,
Shahada

Dr. N. P. Huse

Assistant Professor
Head Department of Physics
G. T. P. College, Nandurbar

Dr. R. G. Bavane

Assistant Professor,
Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalaya,
Jalgaon.

Prof. S. R. Thosare

Associate Professor, Department of Physics
GDM Atrs , KRN Com. And MD Sci, College, Jamner



As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon with effect from June - 2019

S.Y.B.Sc.
Sem - IV

PHY - 401

CBCS
PATTERN

PHYSICS

**WAVES, OSCILLATION
AND ACOUSTICS**

- Dr. V.T. Patil
- Dr. U.P. Khairnar
- Dr. V.R. Huse
- **Dr. N.P. Huse**
- Dr. R.R. Ahire

87H01

125L

As per Syllabus of Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
with effect from June-2019

Choice Based Credit System (CBCS)

A Text book of

530

PAT

87401

PHYSICS

Waves, Oscillations and Acoustics

(PHY-401)

S.Y.B.Sc. (CBCS) Semester-IV Paper-V

Dr. V. T. Patil

Associate Professor in Physics
Arts, Science & Commerce College,
Chopda, Dist. Jalgaon

Dr. V. R. Huse

Assistant Professor in Physics
Arts, Science & Commerce College,
Chopda, Dist. Jalgaon

Dr. U. P. Khairnar

Assistant Professor in Physics
S.S.V.P.S. Arts, Science & Commerce
College, Shindkheda, Dist. Dhule

Dr. N. P. Huse

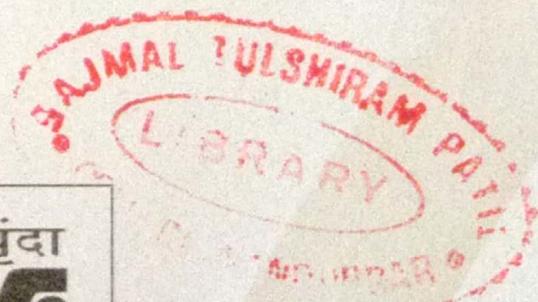
Assistant Professor in Physics
G.T.P. Arts, Comm. & Science College,
Nandurbar, Dist. Nandurbar

Dr. R. R. Ahire

Principal,
S.G. Patil Arts, Comm. & Science College,
Sakri, Dist. Dhule



(A Joint Venture)





Gender Equality and Women Empowerment

Chief Editor

Prin. Dr. Ashok Khairnar

Editor

Prof. Kantilal Sonawane

Prof. Atish Meshram

Dr. Priyanka Sulakhe



Dr. Satish Surje

GENDER EQUALITY AND WOMEN EMPOWERMENT

Chief Editor

Prin. Dr. Ashok Khairnar

Editor

Prof. Kantilal Sonawane

Prof. Atish Meshram

Dr. Priyanka Sulakhe



Atharva Publications



Atharva Publications

Gender Equality and Women Empowerment

© Reserved

ISBN : 978-93-87129-95-5

Book No. : 604

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

- Dhule : 17, Devidas Colony, Varkhedhi Road,
Dhule - 424001.
Contact: 9405206230
- Jalgaon : Basement, Om Hospital,
Near Anglo Urdu Highschool, Dhake Colony,
Jalgaon - 425001.
Contact: 0257-2239666, 9764694797
- Email : atharvapublications@gmail.com
Website : www.atharvapublications.com
- First Edition : 20 Oct. 2018
- Type Setting : Atharva Publications
- Price : ₹ 595/-

Disclaims: The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepancies in future.

- **Women and Human Rights to Education 268**
in Yemen : An Overview
- Mohammed Adulkareem A. Alkamel
- **Rabindranath Tagore's Play 'Chitra' 273**
: A Study of Women Empowerment
- Deepak D. Deore
- **Portrayal of Women in Literature through Ages 277**
- Mr. S. S. Duthade
- Mr. M. S. Nikumbhe
- **Women and Literature 283**
- Prof. (Capt) Sarbjit K. Cheema
- **Woman Empowerment and NGOs 288**
: A study of Mahila Arthik Vikas
Mahamandal, Dhule (M.A.V.I.M.)
- Dr. Suvarna Sahebrao Barde
- ✓ • **Gender Equality and Psychological Issues 295** ✓
- Dr. Sateesh Surye
- **Women's Education and Human Right 298**
- Priti Govind Bijave
- **Imagining a Feminist World 302**
: What Humanities Can Do?
- Mr. Nitin Patil
- **The Status of Dalit Women in 306**
: The Prisons We Broke
- Prof. Wagh M.B.
- **Women Education - Fundamental Human Right 310**
- V. S. Patil
- **Women in India and Media 315**
- Anju Ashok Pakhale
- **Mahashewta Devi's 'Draupadi' 320**
: A New Perspective of Women Empowerment
- Swati Ravindra Vihire
- **The Role of Women in Indian Politics 323**
- Mr. Pankaj L. Sonawane

Gender Equality and Psychological Issues

- Dr. Sateesh Surve
Head, Department of Psychology, G.T. Patil College, Nandurbar

Gender Equality

Gender equality has been an important and popular subject since the late 1900's. Gender inequality, specifically pertaining to women, also causes several other issues to arise, such as a lack of education (Moletsane, 2005). Gender inequality is also related to violence and abuse. Researchers have indicated the need to transform societal norms and perspectives on gender equality, in an attempt to reduce violence against women (Jewkes, Flood & Lang, 2015). However, in places such as the Middle East, where great gender inequality persists, some would argue that women have become accustomed to the constant discrimination. There are a variety of issues related to gender inequality, discrimination, and violence still present in the Middle East, including harmful traditions, forced marriages, and female genital mutilation. Although many organizations - local, national, and international - advocate equal rights for women as well as men, and for the abolishment of violence and discrimination against women, gender inequality, discrimination, and violence against women persists in being an issue to be solved. Gender inequality is a continuous challenge in countries with limited and where men are prioritized (Moletsane, 2005).

Continued gender inequality is also supplemented by the variety of definitions regarding discrimination. The most comprehensive definition refers to discrimination against women being "any distinction, exclusion, or restriction made on the basis of sex which has the effect of impairing or nullifying the recognition, enjoyment or exercise by women, irrespective of their marital status, on a basis of equality of men and women, of human rights and fundamental freedoms in the political, economic, social, cultural, civil or any other field" (UN General Assembly, 1979). Furthermore, violence against women has been defined as "any act or conduct based on gender which causes death or physical, sexual, or psychological harm or suffering to women, whether in the public or private sphere" (Organization of American States, 1994).

However, although violence and discrimination can be defined, and although there are policies established to advocate for gender equality, all of these efforts are futile for as long as women in Africa and the Middle East perceive themselves and their bodies to be the property of their husbands.

Psychological Issues

There are numerous psychological issues that are imposed on women as a result of gender inequality, discrimination, and violence (Umubyeyi, Persson, Mogren & Krantz, 2016). The phenomenon of Middle Eastern women, who are perceived to have become accustomed to gender inequality, discrimination, and violence, should be explored from a psychological point of view, since these women have tolerated decades of abuse. Utilizing Jung's concept of the shadow can be helpful to gain a deeper understanding of this specific topic of women and violence, and can provide reasoning for why women in the Middle East allow themselves to be subjected to violence and gender inequality.

The human psyche is the totality of all the psychic processes (conscious and unconscious), which influences an individual's behavior, thoughts, and personality. According to the founder of analytical psychology, Carl Jung, the human psyche is comprised of three components: the ego, the collective unconscious, and the personal unconscious (Stein, 1998). The shadow refers to hidden desires, which might be opposite of the self, yet are not always negative. The shadow, or negativity, is therefore often a subjective emotion and is a result of social conditions. By applying Jung's idea of the components of the human psyche, the mechanisms and complexes of the unconscious, and the archetypes of the collective unconscious, it may be concluded that Middle Eastern women may feel that they should have equal rights as men do, yet they experience these feelings as negative, because they are opposed to their conditioned social norms. These feelings thus present their shadows, since they are opposite to the traits they were raised with. However, involving Middle Eastern women, the shadow is desirable and should be uncovered and expressed to further women's empowerment and rights. For the proponents of gender equality, oppressed women have to recognize their shadow in order to advocate for equal rights and better treatment. This realization is a necessity to further the motions for gender equality, as well as for governments to develop and pass laws that empower and protect women.

Conclusion

Several countries have instituted legislative measures to guard women from abuse, yet many women still do not reap the benefits from continued efforts and initiatives to better gender equality. When exploring this issue through Jung's explanation of the shadow, one can understand how some women are still entrapped in situations of abuse and discrimination. Gender equality advocates as well as other organizations desire that women understand, identify, and reveal this shadow, as once the shadow is revealed, women will recognize their rights, specifically their right to be free from violence and discrimination, and can start to fight for empowerment and rights.

Works Cited

1. Jewkes R, Flood M, Lang J (2015). From work with men and boys to changes of social norms and reduction of inequities in gender relations: A conceptual shift in prevention of violence against women and girls. *The Lancet* 385: 1580-1589.
2. Moletsane R (2005). Gender equality in education in the context of the millennium development goals: Challenges and opportunities for women. *Convergence* 38: 59-68.
3. Organization of American States (1994). Inter-American convention on the prevention, punishment, and eradication of violence against women.
4. Stein M (1998). Jung's map of the soul. Open Court, Chicago, IL.
5. Umubyeyi A, Persson M, Mogren I, Krantz G (2016). Gender inequality prevents abused women from seeking care despite protection given in gender-based violence legislation: A qualitative study from Rwanda. *PLoS ONE* 11: e0154540.
6. UN General Assembly (1979). Convention on the elimination of discrimination against women.

सामाजिक मानसशास्त्र

SOCIAL PSYCHOLOGY



डॉ. निशा डी. मुंदडा । प्रा. डॉ. सतीश सूर्ये

कवयित्री बहिणावाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव व इतर विद्यापीठांच्या
नवीन अभ्यासक्रमावर आधारित तसेच स्पर्धा परीक्षा, नेट-सेटसाठी उपयुक्त.

महत्त्वाच्या संकल्पना/वस्तुनिष्ठ स्वरूपातील मुद्यांसहीत

सामाजिक मानसशास्त्र

SOCIAL PSYCHOLOGY

प्रा.डॉ.सौ. निशा दिलीप मुंदडा
माजी उपप्राचार्या व मानसशास्त्र विभागप्रमुख
श्री शेठ मुरलीधरजी मानसिंगका कला
वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय
पाचोरा, जि. जळगाव

प्रा.डॉ. सतीश सूर्ये

विभागप्रमुख
पदवी व पदव्युत्तर मानसशास्त्र विभाग
गजमल तुळशीराम पाटील महाविद्यालय
नंदुरबार



अथर्व पब्लिकेशन्स

HEAD
Department of Psychology
G.T.Patil College
Nandurbar -425412



अथर्व पब्लिकेशन्स

सामाजिक मानसशास्त्र
Social Psychology

© सुरक्षित
ISBN 978-93-88544-13-9
Prakashan 622

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क: ९४०५२०६२३०

जळगाव : तळमजला, ओम हॉस्पिटल, अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाकें कॉलनी,

जळगाव ४२५००१. संपर्क: ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल: atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट: www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती: जानेवारी २०१९

अक्षरजुळवणी: अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य: ₹ १५०/-

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपींग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी पस्वानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

२ | अथर्व पब्लिकेशन्स

प्रकरण १ १-३९

सामाजिक मानसशास्त्राची ओळख

Introduction to Social Psychology

- १.१ सामाजिक मानसशास्त्राची व्याख्या व स्वरूप
Definition and Nature of Social Psychology
 - १.१.१ सामाजिक मानसशास्त्राचे शास्त्रीय स्वरूप
(Nature of Social Psychology as a Science)
- १.२ सामाजिक मानसशास्त्राचा संक्षिप्त इतिहास
(भारतीय संदर्भावर विशेष भर)
Brief History of Social Psychology
(Special emphasis on India)
- १.३ सामाजिक मानसशास्त्राची व्याप्ती, सामाजिक वर्तनाचे स्तर
Scope of social psychology, Levels of Social Behaviour
 - १.३.१ सामाजिक मानसशास्त्राची व्याप्ती
Scope of Social Psychology
 - १.३.२ सामाजिक वर्तनाच्या पातळ्या/स्तर
Levels of Social Behaviour
- १.४ सामाजिक वर्तन विषयक दृष्टिकोन
Approaches to Understanding Social Behaviour
 - १.४.१ प्रेरणाविषयक दृष्टिकोन
Motivational Approach
 - १.४.२ अध्ययनविषयक दृष्टिकोन
Learning Approach
 - १.४.३ बोधात्मक दृष्टिकोन
Cognitive Approach
- १.५ समाजाभिमुख वर्तन
Pro-Social Behaviour
 - १.५.१ समाजाभिमुख वर्तनाची नियामके
Determinants of Pro-Social Behaviour

- २.१ सामाजिक बोधन व सामाजिक संवेदनातील फरक
Difference Between Social Cognition and Social Perception
- २.२ आरोपण सिद्धांत
Theories of Attribution
- २.२.१ संबंधित निष्कर्षाचा सिद्धांत
Theory of Correspondent Inference
- २.२.२ कारण-आरोपण सिद्धांत
Theory of Causal Attributions
- २.३ अभिवृत्ती - व्याख्या, घटक, परिमिती व अभिवृत्तीची निर्मिती
Definition, Components, Dimensions and Formation of attitude
- २.३.१ अभिवृत्तीची व्याख्या
Definition of Attitude
- २.३.२ अभिवृत्तीचे घटक
Components of Attitude
- २.३.३ अभिवृत्तीच्या परिमिती
Dimensions of Attitude
- २.३.४ अभिवृत्तीची निर्मिती
Attitude Formation
- २.४ स्व-संकल्पना
Self Concept
- २.४.१ स्व-संकल्पनेचे स्वरूप
Nature of Self Concept
- २.४.२ स्व-जाणीव
Our Sense of Self
- २.४.३ सामाजिक 'स्व'चा विकास
Development of Social Self
- २.५ आक्रमकता
Aggression
- २.५.१ आक्रमकता - अर्थ व स्वरूप
Aggression - Meaning and Nature
- २.५.२ आक्रमकतेला प्रतिबंध व कमी करण्याचे उपाय
Prevention and Reducing Aggression

समूह गतिकी

Group Dynamics

३.१ समूह

Groups

३.१.१ आपण समूहात केव्हा सहभागी होतो?

When we join the group?

३.१.२ आपण समूह केव्हा सोडतो?

When we leave the group?

३.१.३ समूहात सहभागी होण्याचे फायदे

Benefits of joining the group

३.२ समूहातील सहकार्य आणि संघर्ष

Co-operation and Conflict in a group

३.२.१ समूहातील सहकार्य - सामाईक ध्येय साध्य

करण्यासाठी इतरांबरोबर काम करणे

Co-operation in a group

३.२.२ संघर्ष - स्वरूप, कारणे व परिणाम

Group Conflicts - Its Nature, Causes

and effects

३.३ अनुसरिता

Conformity

३.४ आज्ञापालन व अधिकार/सत्ता

Obedience and Authority

३.५ नियंत्रण केंद्र

Locus of Control

३.५.१ आंतरिक नियंत्रण केंद्र

Internal Locus Control

३.५.२ बाह्य नियंत्रण केंद्र

External Locus of Control



प्रा. डॉ. सौ. निशा दिलीप मुंदडा

एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी

- माजी मानसशास्त्र विभाग प्रमुख,
श्री. सेठ मुरलीधरजी मानसिंगका कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पाचोरा
- माजी अध्यक्ष, मानसशास्त्र अभ्यासमंडळ उ.म.वि., जळगाव.
- माजी सदस्या मानसशास्त्र अभ्यास मंडळ, महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ.
- मानसशास्त्र विषयाचा पदवी व पदव्युत्तर ३५ वर्षांचा अनुभव.
- बी.ए. ला सर्व सामाजिकशास्त्रात पुणे विद्यापीठात सर्वप्रथम.
- विविध राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्रात २५ शोधनिबंध सादर, २२ संशोधन पेपर प्रकाशित.
- संशोधन व मान्यता समिती, सदस्या व पीएच.डी. मार्गदर्शक, उ.म.वि., जळगाव.
- व्यक्तिमत्व विकास, आंतरवैयक्तिक संबंध, तणाव व्यवस्थापन इत्यादी विषयांवर कार्यशाळेचे आयोजन व विविध शाळा, महाविद्यालयात व्याख्याने.
- उत्कृष्ट शोधनिबंध सादरीकरणाबद्दल इंडियन अकॅडमी ऑफ अप्लाइड सायकॉलॉजी (IAAP) कडून गौरव.
- 'ICSSR कडून मोबाईल फोनचे परिणाम' लघुशोध प्रकल्प पूर्ण.



प्रा. डॉ. सतीश सूर्ये

(एम.ए., पीएच.डी, सेट, नेट)

विभागप्रमुख, पदवी व पदव्युत्तर मानसशास्त्र विभाग,

नं.ता.वि.स.चे गजमल तुळशीराम पाटील महाविद्यालय, नंदुरबार

- पुणे विद्यापीठ परिसर मानसशास्त्र विभागातून पदव्युत्तर तसेच अंकुशराव टोचे महाविद्यालय, जालना येथून पदवी पर्यंतचे शिक्षण पूर्ण.
- २००८ मध्ये मानसशास्त्र विषयातील सेट तसेच नेट परीक्षा उत्तीर्ण
- Personality and family Envisionment as Predictors Emotional Intelligence among Tribal Adolescents या विषयासाठी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठातून पीएच.डी. पदवी प्राप्त.
- उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या टी.वाय.बी.ए. अभ्यासक्रमावर आधारित 'उपयोजित मानसशास्त्र' या पुस्तकाचे सहलेखन
- उमवि, जळगांव द्वारा Vice chancellor's Research Motivation scheme (VCRMS) अंतर्गत Minos Research Project पूर्ण
- पदवी स्तरावर दहा वर्षे, तर पदव्युत्तर स्तरावर पाच वर्षे अध्यापनाचा अनुभव.
- आंतरराष्ट्रीय स्तरावर तेरा, तर राष्ट्रीय स्तरावर आठ Research Papers प्रकाशित
- राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) कार्यक्रम अधिकारी म्हणून कार्यरत.



अथर्व पब्लिकेशन्स

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...

www.atharvpublications.com



मनोविकृतीच्या
DSM-5 व ICD-10
वर्गीकरण प्रणालीवर आधारित

मनोविकृती मानसशास्त्र

Abnormal Psychology



- डॉ. एस.यु. अहिरे



- डॉ. एस.यु. अहिरे

सहाय्यक प्राध्यापक (मानसशास्त्र)

पदवी व पदव्युत्तर, जी.टी. पाटील कॉलेज, नंदुरबार

- वैद्यकीय क्षेत्राचा (Medical General Practitioner) दहा वर्षांचा अनुभव.
- PG C.C.C. (Post Graduate Counselling Certificate Course) in Sasoon Hospital, Pune.
- शैक्षणिक समुपदेशक (Educational Counsellor) म्हणून केंद्रिय विद्यालय स्कूल, नाशिक येथे ४ वर्षांचा अनुभव.
- डायरेक्टर ऑफ 'माईड आय' सायकोलॉजिकल क्लिनिक.
- राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील परिषदेत शोधनिबंध सादर.
- जिल्हा महिला व बालविकास अधिकारी, नंदुरबार अंतर्गत बालकल्याण समिती सदस्य म्हणून निवड.
- विद्यार्थ्यांसाठी व शिक्षकांसाठी महाविद्यालय व विद्यापीठ स्तरावर अनेक कार्यशाळांचे आयोजन.



अथर्व पब्लिकेशन्स

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...

www.atharvpublications.com



ISBN 978-81-94486-63-3

₹ - 350/-





अथर्व पब्लिकेशन्स

मनोविकृती मानसशास्त्र
(Abnormal Psychology)

© सर्व हक्क सुरक्षित

ISBN 13 : 978-81-944866-3-3

पुस्तक प्रकाशन क्र. ७१२

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००९.

संपर्क: ९४०५३०६२३०

जळगाव : शॉप नं. २, इक्षत्र अपार्टमेंट, शाहू नगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालय समोर, जळगाव ४२५ ००९.

संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : १६ जानेवारी २०१९

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ ३५०/-

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपींग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

२ / अथर्व पब्लिकेशन्स



Atharva Publications

Gender Equality and Women Empowerment

© Reserved

ISBN : 978-93-87129-95-5

Book No. : 604

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

Dhule : 17, Devidas Colony, Varkhedi Road,
Dhule - 424001.
Contact: 9405206230

Jalgaon : Basement, Om Hospital,
Near Anglo Urdu Highschool, Dhake Colony,
Jalgaon - 425001.
Contact: 0257-2239666, 9764694797

Email : atharvapublications@gmail.com
Website : www.atharvapublications.com

First Edition : 20 Oct. 2018

Type Setting : Atharva Publications

Price : ₹595/-

Disclaims: The authors are solely, responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepancies in future.

2 | Atharva Publications



Gender Equality and Women Empowerment

Chief Editor
Prin. Dr. Ashok Khairnar

Editor
Prof. Kantilal Sonawane
Prof. Atish Meshram
Dr. Priyanka Sulakhe





रत्नाकर मतकरींच्या नाटकांतील
सामाजिकता आणि
स्त्रीवादी भूमिका

- प्रा.डॉ. विजया पाटील -



कुमुद पब्लिकेशन्स

रत्नाकरी मतकरीच्या नाटकांतील
सामाजिकता आणि स्त्रीवादी भूमिका

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-85027-52-9

प्रकाशक व मुद्रक

सौ. संगीता युवराज माळी

कुमुद पब्लिकेशन्स

गट नं. १८, प्लॉट नं. १०, श्रीरत्न कॉलनी,
पिंप्राळा परिसर, जळगाव - ४२५००१.

संपर्क : ९४०५२०६२३०, ९९२३३७४८२२

ई-मेल : kumudpublications@gmail.com

प्रथमावृत्ती : एप्रिल २०१९

अक्षरजुळवणी : कुमुद पब्लिकेशन्स

मूल्य : १७५/-

E-Book available on

amazon.in ■ GooglePlayBooks ■ atharvpublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvpublications.com

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.



लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण

मुख्य संपादक
प्राचार्य डॉ. अशोक खैरनार

संपादक
प्रा. कांतीलाल सोनवणे
प्रा. अतिष मेश्राम
डॉ. प्रियंका सुलाखे





अथर्व पब्लिकेशन्स

लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण
Gender Equality and Women Empowerment

© सुरक्षित

ISBN: 978-93-87129-94-8

Book No. : 603

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क : ९४०५२०६२३०

जळगाव : तळमजला, ओम हॉस्पिटल, अँलो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी,
जळगाव ४२५००१. संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvpublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvpublications.com

प्रथमावृत्ती : २० ऑक्टोबर २०१८

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ६९५/-

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvpublications.com

निजामपूर-जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे आदर्श कला महाविद्यालय, निजामपूर-जैताणे येथे दि. २० ऑक्टोबर २०१८ रोजी झालेल्या एकदिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्रातील निवडक लेख. या पुस्तकात समाविष्ट लेखांचे हक्क ज्या-त्या लेखकांकडे असून त्यांच्या मताशी मुख्य संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

- महिला सबलीकरण १४३
- प्रा. रमेश पावरा
- राष्ट्रीय विकास आणि महिला सबलीकरण १४६
- प्रा. रामेश्वर नारायण नगराळे
- भारतीय स्त्री सबलीकरण आणि स्त्रीचे जीवनमान १५१
- प्रा.डॉ. दुर्योधन देवीसिंग राठोड
- भारतीय राजकारणातील महिलांचा सहभाग आणि सक्षमीकरण... १५५
- प्रा.डॉ. बाबासाहेब त्रिंबक मोताळे
- महिला आणि कायदेशीर संरक्षण १६१
- प्रा. शामसिंग डी. वळवी
- बहिणाबाई चौधरी यांच्या कवितेतील स्त्री जीवन दर्शन १६४
- प्रा.एस.डी. पाटील
- साक्री तालुक्यातील अशिक्षित स्त्रियांच्या अहिराणी १७०
ओवीगीतातून प्रकट होणारे भावाबहिणीचे अतूट नाते
- डॉ. प्रकाश श्रीराम साळुंके
- महिला सबलीकरणात माध्यमांची भूमिका १७५
- स्नेहा साहेबराव राठोड
- स्त्री मुक्तीची आंदोलने आणि स्त्रीवादी साहित्य १८१
यातील अनुबंध
- प्रा.डॉ.एस.एस. पुलावळे
- पाटील महेंद्र धोंडू
- महिला सबलीकरणामध्ये कथाकार प्रिया तेंडूलकरांचे १८८
योगदान
- डॉ. सुभाष सदाशिव पुलावळे
- मराठी साहित्यातील सक्षम लेखिका १९५
- प्रा.डॉ. विजया पाटील
- महिला सक्षमीकरण व आर्थिक विकास २०२
- डॉ. वैशाली रा. हजारे

मराठी साहित्यातील सक्षम लेखिका

- प्रा.डॉ. विजया पाटील

गजमल तुळशीराम पाटील महाविद्यालय, नंदुरबार

आपल्या समाजाचा वैदिक काळापासून ते १९ व्या शतकापर्यंत सलग जीवनपट लक्षात घेतला असता असे दिसून येते की, 'धर्म' म्हणून समाजाला पाळाव्या लागणाऱ्या अनेक रूढीपरंपरांनी स्त्री वर्गाला अपार दुःखच दिले आहे. १९ व्या शतकात इंग्रजांच्या येण्याने आपल्याकडच्या तरूणांना जगाचे ज्ञान होऊ लागले. भारताबाहेरचे जग समजू लागले. त्यातून भारतातील व महाराष्ट्रातील स्त्रियांवरील सामाजिक निर्बंधांची जाणीव होऊ लागली. स्त्री वर्गाची होणारी विटंबना जाहीर चर्चेचा विषय झाली. शताकानुशतके स्थिर असलेले आपले सामाजिक जीवन ढवळून निघू लागले. स्त्रियांच्या दुय्यम स्थानाची, गुलामीची जाणीव हळूहळू समाजात निर्माण होऊ लागली. बाहेरचे जग विचारांनी किती पुढारलेले आहे आणि आपण मात्र पाप-पुण्याच्या, धर्म-अधर्माच्या चुकीच्या कल्पनांना उराशी कवटाळून आपल्या मुलींवर आई-बहिणींवर अन्याय करतो आहोत. याची जाणीव शिक्षित विचारी तरूणांना होऊ लागली. ते बंड करू लागले. या जाणीवेतूनच पुरोगामी म्हटल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्रातील जाचक सामाजिक रूढींविरुद्ध लढणाऱ्या आगरकर, लोकहितवादी, दादोबा पांडूरंग, महात्मा फुले, धोंडो केशव कर्वे अशा कळकळीने कार्य करणाऱ्या समाजसुधारकांची, विचारवंतांची एक अखंड अशी फळी १९ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात निर्माण झालेली दिसते. धर्माच्या, कर्मकांडाच्या, रूढीपरंपरांच्या, पुरूषाच्या दास्यातून स्त्रीची मूक्तता करणे हा या सर्व समाजसुधारकांचा सामाजिक परिस्थितीविरुद्ध लढण्यामागचा समान उद्देश होता. बोलण्यातील लेखनातील आणि कृतीतील निर्भयता हे या सगळ्यांचे वैशिष्ट्य होते. स्त्रियांच्या जगण्याचा विचार कार्याच्या केंद्रस्थानी ठेवून या समाजसुधारकांनी कार्य केलेले दिसते. पुरूषप्रधान व स्त्री दुय्यम हे सुत्र समाजमनात पक्के रूजलेले होते. सर्व प्रकारचे दास्य स्त्री वर्गाने मुकाट्याने स्वीकारलेले होते. तिच्यावर त्याग, सेवा, मातृत्व अशा देवत्वाच्या कल्पना लादल्या गेल्या होत्या. इंग्रजांच्या संपर्कातून नव्याने अस्तित्वात आलेल्या सामाजिक न्याय या संकल्पनेमुळे अन्याय, माणुसकीला काळीमा फासणाऱ्या प्रथा परंपरा बदलण्याचा प्रयत्न सुरू झाला.

१८५० च्या सुमारास महात्मा ज्योतिराव फुले यांनी पुण्यात मुलींसाठी

लिंग समभाव आणि महिला सक्षमीकरण । १९५

पहिली शाळासुरू केली. सावित्रीबाईना शिकवले. सावित्रीबाई या पहिल्या स्त्री शिक्षिका झाल्या. १८८९ मध्ये पंडिता रमाबाईनी विधवा व कुमारिकांसाठी शारदा सदन ही शाळा सुरू केली. याच सुमारास धोंडो केशव कर्वे यांनीही विधवांसाठी आश्रम काढला. स्त्रियांच्या शिक्षणाची सोय व्हावी म्हणून शाळा काढल्या. इ.स.१९१६ मध्ये त्यांनी स्त्रियांसाठी स्वतंत्र विद्यापीठाची स्थापना केली. स्त्रियांना उच्च शिक्षण मिळू लागले. शिक्षण मिळायला सुरूवात झाल्यावर स्त्रियांना चार भिंतींच्या घराबाहेरचे जग मोकळेपणाने आणि डोळसपणाने न्याहळण्याची संधी मिळाली. त्यांना आत्मभान येऊ लागले. त्यांच्या अनुभवाचे, अनुभूतीचे क्षेत्र वाढू लागले. आपल्या जीवनाविषयी त्या डोळसपणे विचार करू लागल्या. सावित्रीबाई फुले, डॉ.आनंदीबाई जोशी, रमाबाई रानडे, ताराबाई शिंदे अशा कर्तृत्ववान स्त्रिया पुढे आल्या. अर्थात अशा काही मोजक्याच स्त्रिया बदल स्वीकारू शकल्या. बहुसंख्य स्त्रिया जुन्याच वळणाने दुय्यमत्व गोड मानून जगत राहिल्या. मात्र ज्या शिक्षित स्त्रिया होत्या त्यांना आपल्या स्वत्वाची, माणुसपणाची जाणीव झाली आणि ही जाणीव अनुभूती आपले सुख-दुःख भोवतालची सुख-दुःख त्या शब्दबद्ध करू लागल्या. आपण माणूस आहोत माणूस म्हणून जगले पाहिजे. त्यादृष्टीने व्यक्त झाले पाहिजे. या सशक्त विचाराने लिहित्या झाल्या.

सर्व भारतातील स्त्री जीवनाच्या तुलनेत महाराष्ट्रातले स्त्री जीवन प्रगत असल्याचे दिसते. कारण महाराष्ट्रात विचारवंत समाजसुधारकांची, द्रष्ट्या लोकनेत्यांची, क्रियाशील कार्यकर्त्यांची एक मोठी फळी स्त्रियांच्या उद्धारासाठी फार मोठे कार्य करून गेली. त्याचा हा परिपाक आहे. आज महाराष्ट्रातल्या शिक्षित स्त्रिया आपापल्या क्षेत्रातील अपरिहार्य आणि अत्यावश्यक कामे पूर्ण करण्यासाठी आत्मविश्वासाने पुढे येताना दिसतात. साहित्य क्षेत्रही त्याला अपवाद नाही. गेल्या दिडशे महाराष्ट्रातील समाजधुरीणांनी स्त्रियांसाठी जे-जे केले, सोसले जणू त्याचीच या स्त्रियांनी कृतज्ञता पूर्वक केलेली ही परतफेड आहे असे वाटते. महाराष्ट्रातील समाजजीवन हे या मराठी प्रांतात राहणाऱ्या स्त्री-पुरुषांचे दोघांचे आहे. दोघांचीही प्रगती-अधोगती एकमेकांशी घनिष्ठपणे संबंधित आहे. आजचे मराठी साहित्याचे क्षेत्र केवळ पुरुषांचे राहिलेले नाही. स्त्रियांचाही तेवढाच सशक्त सहभाग आहे. स्त्रिया सबलतेचे दर्शन घडवत सक्षमपणे साहित्याच्या क्षेत्रात विविध नात्यांनी म्हणजे वाचक, लेखिका, संपादिका, प्रकाशिका, अध्यापिका या नात्यांनी सहजतेने वावरत आहेत.

आपल्या सामाजिक वास्तवात असणारे, स्त्रियांच्या संदर्भात जाचक किंवा पोषक ठरणारे, उद्बोधक असे काही घटक समाजापुढे स्पष्ट स्वरूपात ठेवण्याची गरज वाटत असल्याने ठामपणे व्यक्त करित आहेत. सामाजिकदृष्ट्या स्त्री-पुरुष

जीवनाचे जे विषमतेचे चित्र आहे. ते सगळ्यांच्या लक्षात आणून देणे, व्यक्तिस्वातंत्र्य, समानता, मानवमुक्ती ही मूल्य रूजवणे या उद्देशाने मराठीतील लेखिकांचे लेखन झालेले दिसते. त्यातून त्यांची सक्षमता प्रत्ययाला येते. स्त्रियांना चार ओळी वाचता-वाचता लिहिता येणे, छपाईचा शोध लागलेला असल्याने ते लेखन जाहीररित्या प्रसिद्धीस देता येणे यामुळे घराच्या बाहेरचे विशाल विश्व चार भिंतींच्या आत यायला सुरूवात झाली आणि स्त्रियांच्या अंतरंगात जे-जे उमटत होते ते-ते बाहेरच्या जगापर्यंत पोहचवण्याची सोय झाली त्यामुळे एक स्वतंत्र सक्षम माणूस म्हणून स्वतंत्रतेचा श्वास स्त्रिया घेऊ लागल्या. साहित्यातून व्यक्त होऊ लागल्या. शिक्षणामुळे हाती आलेल्या लेखणीच्या माध्यमातून अवघड प्रवास करित, कौटुंबिक आणि सामाजिक समजूती विरोध यांना तोंड देत, संघर्ष करित महिला लिहित्या झाल्या.

स्त्रीला पुरुषावेगळे स्वतंत्र अस्तित्व नाही. ती माणूस म्हणून अस्तित्वाच नाही असे शेकडो वर्षांपासून मानले जाणाऱ्या समाजाचे रूपांतर अलिकडच्या काळात स्त्रियांच्या कर्तबगारीमुळे आणि त्यांच्या जागृत अशा अस्तित्वभावामुळे आश्चर्यचकित, विस्मित झालेल्या समाजात झालेले दिसते. या बदलाच्या खुणा स्त्रियांनी निर्माण केलेल्या साहित्यातून प्रकट होताना दिसतात. त्यातही त्या आत्मकथनांतून अधिक स्पष्ट उमटलेल्या दिसतात. या सक्षम लेखिकांमधील एक म्हणजे लक्ष्मीबाई टिळक. 'स्मृतीचित्रे' हे आत्मकथन त्यांनी लिहिले आहे. स्वतःचे अज्ञान आणि पतीविषयीचा आदरभाव मोकळेपणाने व्यक्त केला आहे. वास्तव जीवनातील बारिक-सारिक तपशील घरगुती बोलीभाषेतून व्यक्त केले आहेत. ना.वा.टिळकांसारख्या ख्रिश्चन धर्माचा स्वीकार करून हिंदू धर्माला सोडणाऱ्या पतीची पत्नी म्हणून त्यांचे जे अनुभव आहेत ते मांडण्याचे धाडस त्यांनी केले आहे. रेव्हरंड टिळक आणि त्यांच्या पत्नी लक्ष्मीबाई या दोघांचे आयुष्य सर्वसामान्यांसारखेच पण नाट्यमय आणि चित्रविचित्र प्रसंगांनी भरलेले होते. रे.टिळकांनी हिंदू धर्म सोडून ख्रिस्ती धर्मात प्रवेश केला. या प्रारंभीच्या धक्क्यातून स्वतःला सावरून लक्ष्मीबाईंनी ख्रिस्ती धर्माकडे कसा प्रवास केला, हा प्रवास करताना समाज जो धर्माधिष्ठित होता. त्याचे हळूहळू बुद्धिनिष्ठ समाजात रूपांतर होत होते, धर्माची पकड घट्ट होती. अगदी हळूहळू ती सैल होत होती अशा काळात पतीने धर्मांतर केले. त्याची साथ देत लक्ष्मीबाईंनीही पावले टाकली. तेव्हा उभयतांच्या आयुष्यात जे मंथन झाले आणि तीव्र स्वरूपाच्या सामाजिक प्रतिक्रियांच्या मान्याला तोंड द्यावे लागले. कौटुंबिक पातळीवर तीव्र क्षोभ उसळला. त्यासाठी आवश्यक असणारा खंबीरपणा, सबलता, सक्षमता लक्ष्मीबाईंजवळ होती. म्हणूनच त्याचे वर्णन स्मृतीचित्रांच्या रूपाने त्यांनी शब्दबद्ध

केले आहे. त्यातून गेल्या अर्धशतकाचा सामाजिक इतिहास माहिती होतो. तसेच रे. टिळकांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा दयस्पर्शी परिचयही होतो. हे आत्मकथन पतीला देव मानणाऱ्या भाविक स्त्रीचे नसून रे.टिळकांच्या सहवासाने फुलत गेलेल्या स्वतःला विकसित करित गेलेल्या एका खेळकर वृत्तीच्या स्वतंत्र प्रवृत्तीच्या सबलेचे कथन आहे. आयुष्याच्या सुरुवातीपासून आयुष्याच्या उतरणीवर एकमेकांमध्ये लहानमोठ अनुभव वाटून घेत समृद्ध जीवन जगणाऱ्या पतीच्या तोडीसतोड असणाऱ्या पत्नीचे आत्मकथन आहे. लक्ष्मीबाईंचा व्यवहारीपणा, वास्तवाचे भान, आल्या प्रसंगाला धीटपणे, विनोदबुद्धी साबीत ठेवून सामोरे जाणे त्यांचे सक्षमत्व सिद्ध करते.

मलिका अमरशेख यांचे 'मला उध्वस्त व्हायचंय' या आत्मकथनाच्या शीर्षकातच मलिकाबाईंचे सक्षमत्व जाणवते. वयाची तिसी ओलांडण्याच्या आतच मलिकाबाईंनी आत्मकथन लिहिले आहे. महाराष्ट्रातल्या सुप्रसिद्ध कलावंत शाहीर अमरशेखांची मलिका ही लाडकी लेक. वडिलांच्या छत्रछायेखाली सुखात बालपण घालवलेली. इतर मुलींपेक्षा आपण वेगळ्या आहोत याची लहानपणापासून जाणीव असलेली. सर्वस्वी कौटुंबिक पार्श्वभूमी भिन्न असणाऱ्या, झोपडपट्टीत राहणाऱ्या दलित पंथरचा कार्यकर्ता विद्रोही बंडखोर कविता लिहिणाऱ्या कवी नामदेव ढसाळ याच्या प्रेमात मलिका पडते. कोणत्याही धार्मिक पद्धतीने विवाह करायचा नाही असे ठामपणे ठरविते. रजिस्टर विवाहासाठी वय कमी पडत असल्याने ठरवलेल्या वेळेपेक्षा उशिरा आलेल्या नामदेवच्या गळ्यात हार घालून विवाहबद्ध होते. अशा जगावेगळ्या जोडप्याचे अनुभव या आत्मकथनात शब्दबद्ध झाले आहे. नामदेव ढसाळांसारख्या जळत्या निखाऱ्याला पती म्हणून स्वीकारणारी मलिका तेवढीच सशक्त आहे. सुरुवातील समंजसपणे वागणारा नामदेव लवकरच आपल्या मुळ पदावर येतो. गावभर हिंडणे, दारू, चरस, अफीम, गांजा, लालपरी यांच्या अधिन असणारा सर्व प्रकारच्या वेश्यांना भोगणारा नामदेव त्याच्या गुप्तरोगाचा त्रास मलिकालाही भोगावा लागतो. त्याच्या व्यक्तिमत्वाने भारवलेल्या मलिकाबाई वास्तवाने बदलतात. भोळसट नम्रतेने वागून चालणार नाही. स्त्रीच्या समस्येची मूळे समाजरचनेत आहेत याची जाणीव आत्मकथनातून व्यक्त करतात. पुरुषप्रधान संस्कृतीविरुद्ध बंड करण्याची भाषा त्यांच्या लेखनातून व्यक्त होताना दिसते. एका फारच लहान वयात कमालीचे संघर्षमय जीवन वाट्याला आल्यावर त्याला धीटपणे सामोरे जाणाऱ्या तरुणीचे हे आत्मकथन तिचे सक्षमत्व सिद्ध करते.

सुप्रसिद्ध लेखक पु.ल.देशपांडे यांच्या सुविद्य पत्नी सुनिताबाई देशपांडे यांचे 'आहे मनोहर तरी' हे आत्मचरित्र एक सक्षम साक्षेपी स्त्रीचे आत्मचरित्र

आहे. हे आत्मचरित्र म्हणजे त्यांनी घेतलेला स्वतःचा शोध आहे. पु.लं. सारख्या असामान्य वाचकप्रिय साहित्यिकाची पत्नी त्यांच्या विद्वत्तेच्या लोकप्रियतेच्या झगमगाटामध्ये मिणमिणारी पणती नसून तेवढीच तेजःपुंज आहे. याचा प्रत्यय यातून येतो. सुनिता बाईची विविध रूपे पाहायला मिळतात. बालपणी सापाशी गप्पा मारणारी, आई-वडिलांचा रोष पत्करून कॉलेज शिक्षण सोडून स्वराज्याच्या चळवळीत जाणारी, मनोभावे सेवा करणारी, पु.लं.देशपांडे या तरूणाचा प्रेमात पडणारी, खुप विचार करून विवाह कशासाठी करायचा हे शोधणारी, प्रत्येक कामात काटेकोर असणारी, न्यायासाठी झगडणारी, निर्भय, रसिक अशी रूपे पाहायला मिळतात. त्यातून त्यांच्या अष्टपैलू व्यक्तित्वाची कल्पना येते. एक संवेदनशील प्रगल्भ व्यक्तिमत्व स्वतःचे आणि सभोवतालचे परखड मूल्यमापन करीत असल्याचा प्रत्यय येतो. त्यासाठी केलेले प्रतिपादन ठाम आणि स्पष्ट असल्याचे दिसते. पु.ल.च्या वलयात स्वतःचे वेगळेपण झाकोळून जावू दिलेले नाही. पती पत्नीच्या सहजीवनात सुनिताबाईंचा वेळोवेळी झालेला अपेक्षाभंग स्पष्टपणे मांडलेला आहे. समाजकार्यात, कलाजीवनात हे उभयता पतीपत्नी सतत बरोबर आहेत. जीवन आहे मनोहर तरी उदास वाटते याचा शोध सुनिताबाई प्रांजळपणे घेताना दिसतात. येथे त्यांचे सक्षमत्व लक्षात येते.

स्वातंत्र्यानंतरच्या अनेक वर्षांनंतरही समाजाची मानसिकता बदललेली दिसत नाही. वरवर पाहता दलित समाजाचा आर्थिकस्तर उंचावला, परिस्थितीच्या रेट्याने रोजच्या व्यवहारात समानतेचा देखावा आला पण मनातले जातीपार्तींचे हिशेब तसेच राहिले याची जाणीव उर्मिला पवार यांच्या 'आयदान' या आत्मकथनातून व्यक्त होताना दिसते. ग्रामीण भागातल्या दलित स्त्रीच्या भोगवट्यापासून ते उच्च शिक्षण घेऊन आयुष्यात स्थिरावलेल्या संसारी स्त्रीच्या वाटचालीपर्यंतचा प्रवास उर्मिला पवारांच्या 'आयदान'मध्ये चित्रित झाला आहे. आयदान विणणाऱ्या कष्टकरी, अशिक्षित आईच्या दलित कुटुंबातील अनुभवांपासून सुरू झालेले हे आत्मकथन कोणत्याही एका मध्यमवर्गीय, स्वतःच्या हक्काची जाणीव झालेल्या स्त्रीचे आत्मकथन होत जाते. एक स्त्री म्हणून जाणवणारा व्यवस्थेचा जाच उर्मिलाबाईंनी अत्यंत ताकदीने मांडलेला आहे. आत्मसन्मानाची नवी जाणीवही त्यांनी व्यक्त केली आहे. ती मिळवत असताना पुरुषी अहंभाव कसा आड येतो. त्याचेही चित्रण केले आहे. स्त्री-पुरुष लिंगभेद हा जातीयतेइतकाच भयानक आहे. त्याची मुळे समाजाच्या आत खोलवर रूजलेली आहेत. उर्मिला बाईंनी 'आयदान'मध्ये या लिंगभेदाचे चित्रण अनेक पातळ्यांवर केले आहे. स्त्री किंवा पुरुषाकडे एक व्यक्ती एवढ्याच निकोप आणि स्वच्छ भावनेने पाहण्याची क्षमता आली पाहिजे. याची जाणीव उर्मिलाबाईंनी सातत्याने

सामर्थ्याने व्यक्त केली आहे. एक सामाजिक दस्ताऐवज म्हणून मौल्यवान ठरणारे हे आत्मकथन उर्मिला पवारांचे सक्षमत्व सिद्ध करतात.

संगीता धायगुडे यांचे 'हुमान' हे आत्मकथन समाजाला आणि विशेषत्वाने त्यातील 'स्त्री' या महत्त्वाच्या घटकाला प्रेरणादायी असे आहे. ते स्त्रीवर्गाला उर्जा देणारे आहे. आज स्त्रियांकडे बघण्याचा जो एक वस्तुवादी दृष्टीकोन वाढतो आहे. दुसरीकडे मूलतत्त्ववादी दृष्टीकोनामुळे, बुरसटलेल्या विचारांचा लेप चढवून स्त्रियांना माखवले जाते आहे. अशा काळात संगीता धायगुडे यांच्यासारखी एक स्त्री केवळ शिक्षणाच्या बळावर प्रशासकीय अधिकार पदापर्यंत पोहचते, आपल्या आत्मसामर्थ्याच्या जोरावर अनेक अडथळ्यांवर मात करित पुढे जात राहते हे त्यांच्या असामान्यत्वाचे दर्शन होय. संगीता धायगुडेचा हा प्रवास थक करणारा आहेच. शिवाय त्यांच्या विचारांचे बोट धरून सर्वसामान्य स्त्रीवर्गाला उठवणारा व पुढचा प्रवास करण्यास प्रवृत्त करणारा आहे.

'हुमान' हे आंधळी गावच्या एका डोळस मुलीचे आत्मकथन आहे. अनेक अडचणी, अडथळ्यांवर मात करित शिक्षणाची कास धरून मोठ्या सजगपणे संगीताबाई आपल्या आयुष्याला सामोर गेलेल्या दिसतात. 'समस्या संपून जातात, पण शिक्षण आपल्याबरोबर कायम राहतं' हा संदेश त्यांनी स्वतःसाठी मार्गदर्शक ठेवला. इतरांनाही मार्गदर्शन करण्यासाठी वापरलेला दिसतो. शिक्षणातून, शिक्षण घेण्यातून विद्यार्थीपण अनुभवण्यातून सकारात्मक दृष्टीकोन त्यांनी अंगी बाणवला. त्यांच्या जोरावरच आयुष्याचा मार्ग आक्रमिला. दुःखा-कष्टाचे सागर ताकदीने पिऊन टाकले. त्यांचा लौकिक प्रवास त्यांचा मानसिक प्रवासही ठरला आहे. त्यांचा विविध भाषांचा अभ्यास, साहित्य, ललित कलांची असलेली आवड त्यांच्या लेखनातून व्यक्त होताना दिसते. त्यांच्या आत्मकथनात प्रवासवर्णनाचे लालित्य, कथा-कांदबरीतील गुढरम्यता काव्यातील तरलता, पत्र स्वरूपातील थेटपणा असे अनेक कंगोरे दिसून येतात. प्रांजळपणे लिहिलेले आत्मकथन सर्व वाङ्मय प्रकारांच्या झलकेने संपृक्त, सशक्त झालेले दिसते. संगीता धायगुडेचे एक व्यक्ती म्हणून असलेले सामर्थ्य सिद्ध करते.

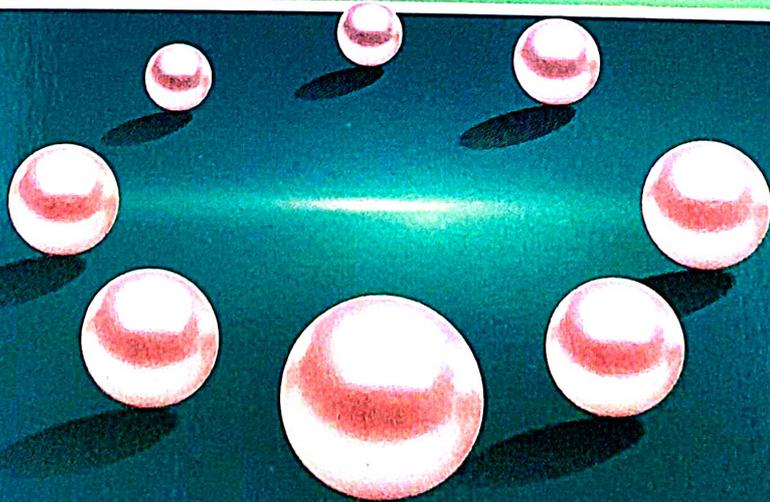
एकूणच समाजाच्या विविध स्तरांतील लोकांची अभिव्यक्ती साहित्याला जशी संपन्न बनविते तशीच आत्मचरित्रे, आत्मकथने समाजाचे अंतःस्तर उलगडून दाखवित असतात. अर्धे आकाश, अर्धी पृथ्वी ज्यांनी व्यापलेली आहे. अशा स्त्रियांची मनोगते शब्दांकित व्हायला बराच काळ लोटला. मराठी साहित्यात महिलांच्या आत्मकथनांतून ही थरथर उमटली आणि सारे साहित्यविश्व ढवळून निघाले. स्त्रियांच्या मनातील 'स्व'ची स्पंदने व्यक्त झाली. केवळ समाजपुरुषाचीच नव्हे तर समाजमनाची बंधने साऱ्या शक्तिनिशी दूर सारून आपल्यातल्या सामर्थ्याचे

दर्शन घडविले. आपण एक व्यक्ती आहोत आणि समष्टीतील आपले स्थान महत्वाचे आहे हे दाखवून दिले आहे. त्यातील काही प्रातिनिधिक साहित्यिक महिलांच्या लेखनाचा उहापोह केला आहे.

संदर्भसूची

१. 'स्त्री साहित्याचा मागोवा - खंड १, इ.स.१८५० ते १९५०', संपा.डॉ. मंदा खांडगे आणि इतर, साहित्यप्रेमी भगिनी मंडळ, पुणे, प्रथमावृत्ती डिसेंबर २००२.
२. 'स्त्री साहित्याचा मागोवा - खंड २, इ.स.१९५० ते २०००', संपा.डॉ. मंदा खांडगे आणि इतर, साहित्यप्रेमी भगिनी मंडळ, पुणे, प्रथमावृत्ती डिसेंबर २००२.
३. 'स्त्री साहित्याचा मागोवा - खंड ४, इ.स.२००१ ते २०१०', संपा.डॉ. मंदा खांडगे आणि इतर, डायमंड प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती नोव्हेंबर २०१५.
४. 'महर्षी ते गौरी', मंगला आठलेकर, राजहंस प्रकाशन, पुणे, दुसरी आवृत्ती २०००.
५. 'स्त्री आत्मकथन', संपा.प्रा. चंद्रकुमार नलगे, सुरेश एजन्सी, पुणे, जुलै १९९०.
६. 'आयदान : सांस्कृतिक ठेवा', संपा.डॉ. सिसिलिया काव्हॅलो.
७. 'आहे मनोहर तरी', सुनिता देशपांडे, मौज प्रकाशनगृह, मुंबई, सहावी आवृत्ती १९९९.
८. 'हुमान', संगीता धायगुडे, ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई, पाचवी आवृत्ती डिसेंबर २०१४.
९. 'स्मृतिचित्रे - लक्ष्मीबाई टिळक', वरदा प्रकाशन, पुणे, सहावी आवृत्ती मे २०१२.
१०. 'आयदान', उर्मिला पवार, ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई, सहावे पुनर्मुद्रण डिसेंबर २००८.

LANGUAGE PEARLS



Dr. Vijay Chaudhari / **Dr. Bhupendra Kesur**



Atharva Publications

LANGUAGE PEARLS

© Reserved

ISBN : 978-93-87129-84-9

Book No. : 593

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

- Dhule : 17, Devidas Colony, Varkhedi Road,
Dhule - 424001.
Contact: 9405206230
- Jalgaon : Basement, Om Hospital,
Near Anglo Urdu Highschool, Dhake Colony,
Jalgaon - 425001.
Contact: 0257-2239666, 9764694797
- Email : atharvapublications@gmail.com
Website : www.atharvapublications.com
- First Edition : 3 Sept. 2018
- Type Setting : Atharva Publications
- Price : ₹ 60/-

Disclaims: The authors are solely, responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepanices in future.

“Real education enhances the dignity of a human being and increases his or her self-respect. If only the real sense of education could be realized by each individual and carried forward in every field of human activity, the world will be so much a better place to live in.”

“Teaching is a very noble profession that shapes the character, caliber, and future of an individual...”

“Let us sacrifice our today so that our children can have a better tomorrow.”

- *A. P. J. Abdul Kalam*

Think like a wise man but communicate in the language of the people.

- *William Butler Yeats*

The significance of language for the evolution of culture lies in this, that mankind set up in language a separate world beside the other world, a place it took to be so firmly set that, standing upon it, it could lift the rest of the world off its hinges and make itself master of it. To the extent that man has for long ages believed in the concepts and names of things as in aeternae veritates he has appropriated to himself that pride by which he raised himself above the animal: he really thought that in language he possessed knowledge of the world.

- *Friedrich Nietzsche*



Atharva Publications

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...

www.atharvpublications.com



ISBN 978-93-87129-84-9



₹ - 60/-



9 789387 129849

593